"कंटेनर की बात, कॉनकॉर के साथ"

कॉनकॉर
CONCOR

त्रैमासिक पत्रिका

अंक: 47-जनवरी, 2020

मधुभाषिका

भारतीय कंटेनर निगम लिमिटेड

(भारत सरकार का नवरत्न उपक्रम)

जनवरी 2020 में चेन्नै में ''लास्ट माइल पोर्ट कनेक्टिविटी विद इंडियन रेलवे'' विषय पर आयोजित बैठक में उपस्थित रेलवे की संसदीय स्थायी समिति के माननीय सदस्यगण।

"लास्ट माइल पोर्ट कनेक्टिविटी विद इंडियन रेलवे" विषय पर रेलवे की संसदीय स्थायी समिति के जनवरी 2020 में चेन्नै में हुई बैठक में भाग लेते श्री वी.कल्याण रामा, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक एवं अन्य उच्च पदाधिकारी।

अंकः 47 जनवरी 2020, त्रैमासिक पत्रिका

संरक्षक
श्री वी. कल्याण रामा
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संपादक मंडल
श्री संतोष कुमार झा
मुख्य राजभाषा अधिकारी

श्री अनुराग माथुर
कार्यपालक निदेशक

श्री शरद वर्मा
कार्यपालक निदेशक

संपादक
श्री विनोद राय
उप महाप्रबंधक

संकलन सहयोग
श्रीमती दीपा पाण्डेय
श्री धीरज शर्मा
श्रीमती ज्योति

संपादक मंडल का लेखकों के विचारों से सहमत होना अनिवार्य नहीं।

भारतीय कंटेनर निगम लि.
कॉनकॉर भवन, सी–3, मथुरा रोड,
जसोला अपोलो मैट्रो स्टेशन के पास, नई दिल्ली–76
फोन नं: 011–41673093,94,95,96
फैक्सः 011–41673112
ईमेलः co@concorindia.com
वेबसाइटः www.concorindia.com

विषय सूची

1	अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय का संदेश		2
2	मुख्य राजभाषा अधिकारी की कलम से		3
3	संपादकीय		4
4	अनुभव	ब्यूटी घोष	5
5	नागरिक	शैलेश कुमार पंडित	6
6	डर	संतोष कुमार झा	7
7	हम दोनों	सुदर्शन सिंह	7
8	मेरी कालोनी का स्वतंत्रता दिवस	विनोद राय	8
9	बाल खंड		10
10	इस तिमाही के साहित्यकार	जयशंकर प्रसाद	15
11	फोटोग्राफी	जैनेंद्र कुमार	16
12	विभागीय गतिविधियां		23
13	सीएसआर गतिविधियां		24
14	इंसानियत कहां है?	आक्शा जोनेजा	26
15	राजनीतिक उठापटक	पूर्णेन्दु कुमार श्रीवास्तव	26
16	आनंद	ज्योति	27
17	काश ! मैं स्कूल नहीं जाता	नितेश भूषण	30
18	मैं इंसान हूँ	नजमुन नवी खां 'नाज'	31
19	मेरा मानना है	गिरिजा शंकर	31
20	दो कलियाँ	कीर्ति	32
21	मोबाइल चोर	सुभाष चंद्र	32
22	HR प्रबंधन में M की भूमिका	सुखविंदर	33
23	सदभावना और समभाव	मीनाक्षी	34
24	नया विचार आया	सविता	35
25	कॉनकॉर का हिन्दी गीत	सी गोपालाकृष्णन	35
26	सत्य की खोज में,लगा दिया.....	अनीता माखिजानी	36
27	हमारी कुछ चुनौतियां	सलोनी खिन्द्री	37
28	मधुभाषिका के रचनाकार कृपया ध्यान दें		38
29	पुरस्कृत रचनाएं		39
30	पाठकों के पत्र		40

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय का संदेश

मुझे प्रसन्नता है कि कॉनकॉर की गृह पत्रिका **"मधुभाषिका"** का 47वां अंक आपके समक्ष है। हिंदी का जितना प्रचार–प्रसार बढ़ेगा उतना ही देश के लिए अच्छा होगा। सर्वाधिक लोगों द्वारा बोली व समझी जाने वाली राजभाषा हिंदी देशवासियों के बीच सौहार्द व समरसता उत्पन्न करती है। कॉनकॉर में राजभाषा हिंदी के प्रयोग में निरंतर वृद्धि हो रही है। राजभाषा की प्रगति और विकास हेतु हमें इसी तरह निरंतर प्रयत्नशील रहना होगा।

आशा करता हूं कि यह अंक हिंदी के कार्य को आगे बढ़ाएगा जिससे कार्यालय में राजभाषा हिंदी का प्रचार–प्रसार और बढ़ेगा।

शुभकामनाओं सहित।

वी. कल्याण रामा
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

मुख्य राजभाषा अधिकारी की कलम से

कॉनकॉर की गृह पत्रिका **"मधुभाषिका"** का 47 वां अंक आप सभी को सौंपते हुए मुझे अति प्रसन्नता है। पत्रिका के माध्यम से कॉनकॉर परिवार में राजभाषा के प्रति निरंतर लगाव बढ़ा है तथा राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने में भी सफलता मिली है। **"मधुभाषिका"** कॉनकॉर कर्मियों सहित उनके परिवार के सदस्यों को भी एक सार्थक मंच देती है जिसके माध्यम से वे अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हैं। पत्रिका के इस अंक में जिन विविध विषयों का समावेश किया गया है उनमें कविता, कहानी, लेख, बाल रचनाएं इत्यादि सम्मिलित हैं। पत्रिका में कंपनी की व्यावसायिक गतिविधियां भी शामिल हैं। कॉनकॉर में मौलिक लेखन को प्रोत्साहन देने एवं राजभाषा के प्रचार–प्रसार में यह पत्रिका एक अग्रणी भूमिका निभा रही है।

मुझे विश्वास है कि इस अंक को भी आपका यथावत स्नेह मिलेगा।

शुभकामनाओं सहित।

संतोष कुमार झा
मुख्य राजभाषा अधिकारी

संपादकीय

गृह पत्रिका **"मधुभाषिका"** का 47वां अंक सभी पाठकों को सौंपते हुए मैं बहुत प्रसन्न हूं। पत्रिका के निरंतर और नियमित प्रकाशन से कॉनकॉर कर्मियों को एक सृजनात्मक प्लेटफार्म मिला है जिससे वें अपनी रचनात्मक प्रतिभा को आगे बढ़ा सकते है। प्रस्तुत अंक में हिंदी साहित्य जगत के प्रसिद्ध उपन्यास एवं कहानीकार **"जैनेन्द्र कुमार"** की कहानी **"फोटोग्राफी"** को प्रकाशित किया गया है। कहानी में फोटोग्राफी का शौकिया फोटोग्राफर – कथानायक रामेश्वर एक सुंदर, युवा मां के मचले हुए अल्पायु बेटे को झूठमूठ अपने कैमरे से बहलाते हुए एक विचित्र संबंध बना लेता है पर अपने झूठ से एक नैतिक संकट में भी फंस जाता है। साथ ही पत्रिका में**"जयशंकर प्रसाद"** की **"प्रियतम"** कविता को भी स्थान दिया गया है। जो मार्मिक व हृदयस्पर्शी है।

मुझे विश्वास है कि यह अंक भी पूर्व के अंको की तरह आपको नएपन का आभास देगा। पत्रिका के प्रति अपना निरंतर विश्वास व्यक्त करने के लिए आप सभी का आभार एवं नववर्ष की शुभकामनाएं

आपका शुभेच्छु

विनोद राय
संपादक

अनुभव

ब्यूटी घोष
उत्तरी क्षेत्र, तुगलकाबाद

जिंदगी में कभी–कभी आप कुछ ऐसे रास्तों से गुजरते हो जो आपको बहुत सी बातें दिखा एवं सिखा जाती हैं। कुछ ऐसे ही अनुभव से मैं उस दिन रूबरू हुई। हर रोज की तरह उस दिन भी मैं अपने ऑफिस के लिए निकली थी। सुबह की गहमागहमी, लोगों को अपने काम पर पहुंचने की हड़बड़ाहट अब यह मंजर आम हो गया था। हर दिन की तरह उस दिन भी दिल्ली का ट्रैफिक मेरी चिड़चिड़ाहट की वजह बना हुआ था। बड़ी ही आसानी से मैं अपने लेट निकलने की आदत को ट्रैफिक नियमों–कायदों की आड़ में ढक रही थी और तभी रेड लाइट पर इस बातों के बीच कुछ ऐसा दिखाई दिया जिसने मेरा सारा ध्यान खींच लिया और मुझे खामोश कर दिया। एक औरत जिसका झुका हुआ शरीर और चेहरे की सिकुड़न उसकी उम्र बता रही थी, करीब 75 वर्ष की बूढ़ी औरत सड़क पर गाड़ियों के बीच कुछ कर रही थी? आप कहेंगे कि भीख मांग रही होगी और क्या? यकीन मानिए आपकी ही तरह मुझे भी यही लगा था, पर कहानी तो कुछ और ही थी जैसे–जैसे मेरा रिक्शा उसके और करीब पहुंचा तब मैंने गौर किया उनको टूटा हुआ चश्मा, पैरों की घिसी हुई चप्पले गरीबी का सबूत दे रही थी। वह बूढ़ी औरत साधारण नहीं थी वह ठीक ढंग से चल तक नहीं पा रही थी, और उसने अपनी पीठ पर एक अगरबत्तियों का झोला टांगा हुआ था और हर गाड़ी की ओर बढ़ती, खिड़की खटखटाती, कुछ सेकंड रूकती और आगे बढ़ जाती। कोई गाड़ी उसकी मदद तो दूर अपनी गाड़ी का शीशा तक नीचे नहीं कर रही थी फिर भी वह एक गाड़ी से दूसरी, दूसरी से तीसरी की तरफ छोटे–छोटे कदम बढ़ाते रहती। इतने में ग्रीन सिग्नल ने मेरा ध्यान तोड़ दिया, वो वही रह गई और मैं आगे बढ़ गई। मैंने पलट कर देखा तो वह अगली रेड लाइट के इंतजार में अपना झोला लिए किनारे पर हो गई। उस पल जो मैंने देखा उसने मेरे अंतर्मन को हिला कर रख दिया। उस औरत ने बहुत सी बातें अनजाने में ही सिखा दी। यह सिखा दिया कि इंसान गरीब हो सकता है, लाचार नहीं, कुछ भी हो जाए कोशिश करते रहना चाहिए और यह भी सिखा दिया कि काम करने की कोई उम्र या कोई सीमा नहीं होती। आज एक तरफ जहां सड़कों पर शारीरिक रूप से सक्षम लोग भी भीख मांगते दिख जाएंगे वहीं इस औरत ने भीख मांगने के बजाय कमा के खाने का उदाहरण सामने रख दिया और बताया की बेबसी और लाचारी के सामने आत्मबल मजबूत साबित होता है। लगभग हर दूसरे–तीसरे दिन उसी रास्ते पर वह मुझे दिखाई देती है। मैं उससे अगरबत्तियों के पैकेट भी खरीदती हूं और वह अपना हाथ ऊपर की ओर कर मुझे आशीर्वाद भी देती है और आगे बढ़ जाती हैं। जीवन में कुछ घटनाएं आपको ख्वाबों के बिस्तर से उठाकर असलियत के दरवाजे पर खड़ा कर देती है और अपने नजरिए को बदलने पर मजबूर कर देती है। कुछ ऐसी ही थी यह घटना अब यह मेरी जिंदगी का एक अहम हिस्सा बन चुकी है। वह एक यादगार सफर था...... सफर मेरे अनुभव का।

नागरिक

शैलेश कुमार पंडित
कार्यपालक (वा. एवं परि.)
उत्तर मध्य क्षेत्र, दादरी

नागरिक...जी हां नागरिक ही कहा मैंने,
जर्जर भिखारी ने कहा।
तो यहां क्या कर रहे हो?
सूट बूट धारी लोगों ने उसे घुड़का।
अपना सच ढूंढ रहा हूं ...साहिब ।
मतलब?
नहीं समझे?
नहीं। समझा दो।
सच यानी अपने यहां का होने के प्रमाण साहिब।
तुम यहीं के हो?
पीढ़ियां गुजर गईं यहीं।
फिर प्रमाण क्या?
अपने हाकिमों को दिखाना होगा न।
वरना कहां भीख मांगूंगा?
तुम्हारा मतलब भीख मांगने के लाइसेंस से है क्या?
हे हे हे...नहीं समझे फिर से।
ऐं..? सूटवाले बुदबुदाए।
मतलब यहां का होने से है।
भीख तो तुम भी मांग रहे हो।
क्या? गुस्से में सवाल किया गया।
भिखारी कभी गुस्सा नहीं होते।
तुम कागज के नए टुकड़ों पर इतरा रहे हो,
जो तुम लोगों ने किसी तरह हासिल कर लिए हैं।
और तुम?
मैं अपने पुश्तैनी काग़ज़ात टटोल रहा हूं,
अपने बाप दादा की भीख वाली झोलियों में।
तुम पुश्तैनी भिखारी... बेगर हो?
जैसे तुम सब खानदानी भगोड़े हो।
क्या?
हां। झमन सिंह का नामी गिरामी परिवार परंपराओं का निर्वाह करता हुआ सड़क पर आ गया है।
कौन झमन?
झमन सिंह, मेरे दादा थे। जमीन जायदाद थी।
खेती–बाड़ी करते हुए कर्ज में दबते गए।
जमीन रेहन हुई, फिर बैनामा।
बची–कुची कुछ जमीन भगोड़ों के भेंट हो गई।
परिवार सड़क पर आ गया।
तुम?
गुमान सिंह हूं, झमन सिंह का बेटा।
बी. ए. किया है, आर्ट से। नौकरी नहीं हुई।
हम लंबे अरसे से यहां रह रहे हैं।
और हम यहीं के है।
फर्क है कि तुम लोगों के चलते
हम लोग भिखारी हो गए।
ज्यादा मत बोलो।
अभी बोलने को और भी है। जरा धैर्य रखो भगोड़ो!
कौन ठिकाना हमारी जमीन तुम्हारे पास से निकले
फिर वह भिखारी अपनी पोटलियों में जल्दी–जल्दी कुछ तलाशने लगा..........।

डर

संतोष कुमार झा,
मुख्य राजभाषा अधिकारी,
निगमित कार्यालय

वह एक कलाकार था
लेकिन उसकी कला चुभती बहुत थी

वह मनमौजी था, इसलिये
अपने मन की सुनता था
अपने मन की कहता था
अपने मन की करता था

वह मौलिक था
इसलिये बनावटी नहीं हो सकता था

सृजनात्मकता उसकी ताकत थी
इसलिये वह विध्वंस नहीं कर सकता था

वह संवेदनशील था
इसलिये हानिकारक नहीं हो सकता था
उसकी कला विचार करने पर
मजबूर करती थी
उसकी आवाज ऐशो आराम की
तंद्रा को भंग करती थी
वह सुषुप्त चेतनाओं को
जागृत करता था

उसे पाने की लालसा नहीं थी
और न ही खोने का डर था
इसलिये वह भयभीत नहीं होता था

लिहाज़ा एक दिन उसे मार दिया गया
क्योंकि वह लोगों का डर कम कर रहा था।

हम दोनों

सुदर्शन सिंह
पिता श्रीमती गुरप्रीत कौर, सचिव
निगमित कार्यालय

जीवन का चौथा पहर
हम बरसों के साथी
चलो शुरू करें फिर से एक नई कहानी
मिलकर एक साथ हम दोनों।

वो गाँव के खलिहानों की
हरी–हरी पगडंडियों पर
चलें फिर कदम से कदम मिलाकर
एक साथ हम दोनों ।

वो दरिया के नीले पानी को
अंजुली में भर कर फेकें इक दूजे पर
और फिर खिलखिलाएँ
मिलकर एक साथ हम दोनों।

वो आसमानी बादल
बारिश की ठंडी फुहारें
बहते पानी में कागज की कश्ती बहाये
मिलकर एक साथ हम दोनों।

वो हरे घनेरे तरुयों की छायों में
तेरी गोद में सिर रख कर
फिर से सपना सजाएँ
मिलकर एक साथ हम दोनों।

मेरी कालोनी का स्वतंत्रता दिवस

विनोद राय
उप महाप्रबंधक (रा.भा. एवं सीएसआर)
निगमित कार्यालय

15 अगस्त, 1947 के दिन हम आजाद हुए थे। तब से सारे देश में हम यही दिन परम्परागत उल्लास के साथ मनाते हैं और यही उल्लास आज हमारी कालोनी में व्याप्त है। आज सेवरे से ही 'मेरे देश की धरती सोना उगले' का गीत बज रहा है। पिछले एक हफ्ते से स्वतंत्रता दिवस मनाने की तैयारी चल रही है। कालोनी के कई छुटभैये नेता सक्रिय हो उठे हैं। वैसे तो वे सारे साल दलाली का काम करते हैं परंतु स्वतंत्रता दिवस व गणतंत्र दिवस के दिन इनकी सक्रियता देखकर ऐसा महसूस होता है जैसे स्वतंत्रता इन्ही ने दिलाई हो। पूरी कालोनी में पर्चे लग गए हैं कि कल बड़े मैदान में झंडा फहराया जाएगा। यह बात अलग है कि कालोनी के युवा बच्चे उन पर्चो पर अपनी प्रेमिकाओं के नाम लिख कर प्रचारित कर रहे हैं।

कालोनी के एक गिराज में छोटे–छोटे बच्चे देशभक्ति गीतों का रियाज कर रहे थे। यह रियाज पिछले एक हफ्ते से चल रहा था। मैंने सोचा कि चलकर खुद ही क्यूं न देख लूं कि बच्चे किस तरह की तैयारी कर रहे हैं। गराज में पहुंचने पर बच्चों का उत्साह तो देखते ही बना। वे अपनी ही धुन में मस्त थे और इसी तरह की मस्ती का फायदा प्रशिक्षक महोदय ले रहे थे। अब तक प्यासे प्रेम को गराज रूपी सरोवर में जब से पनाह मिली है तब से प्रशिक्षक महोदय की आवाज कुछ और ही सुरीली को गई थी। मैंने भी गराज के कई चक्कर लगाएं परंतु देश प्रेमी के रूप में नहीं बल्कि प्रेमी के रूप में, पर कोई न मिला फिर भी वे तो मुझसे अच्छे थे जो देश प्रेम नहीं तो आपस में ही प्रेम कर रहे थे। खैर इससे इस बात का खुलासा हुआ कि पिछले स्वतंत्रता दिवस पर एक हफ्ते रिहर्सल चला बाद में दो सीखने वालों ने आपस में विवाह कर लिया था।

आज सवेरा होते ही पूरे कालोनी में लाउडस्पीकर का शोर सुनाई पड़ने लगा। लाउडस्पीकर वाला 'मेरे देश की धरती सोना उगले' के बाद की 'कजरा मुहब्बत वाला' या फिर 'देखा है पहली बार साजन की आखों में प्यार' गीत बजा देता था। इससे सब लोग प्रसन्न थे। ऐसा गाना बजाने पर आयोजकों से पूछने पर पता चला कि लड़कों व लड़कियों को 15 अगस्त, 26 जनवरी और महात्मा गाँधी दिवस पर एकत्रित करने का यही एक तरीका है। छोटे बच्चे सुबह से ही तैयार होकर पार्क में जमा हो गए थे। साथ जो भी बड़ा व्यक्ति वहां से गुजरता उससे भाग लेने के लिए कहते थे।

थोड़ी देर बाद लोग पार्क में जमा होने लगे। बड़े नेता जी माइक के समीप पूरी सजगता के साथ भ्रमण करने लगे। माइक वाले को माइक दुरस्त करने को कहा तथा अपनी जेब में रखे एक कागज को निकालकर पढ़ने लगे। थोड़ी देर बाद पार्क में भीड़ बढ़ गई। सबसे ज्यादा होड़ महिलाओं के पास बैठने की थी। खूबसूरत महिलाएं तो बस खड़ी थी इसलिए लोग उनके पीछे ऐसे खड़े हो गए जिससे पार्क में एक लम्बी लाईन लग गई। कम सुंदर महिलाएं नीचे बैठ गई थी तथा अपने अथक प्रयासों के बावजूद कुछ पुरूष उनके पीछे बैठ कर टकटकी लगाए हुए थे।

बच्चे जहां मिठाई व पानी रखा था वहां इकट्ठे हो गए थे। थोड़ी देर बाद मुख्य अतिथि महोदय आए। वक्ता ने उनका परिचय कराया कि देश को आजाद कराने के लिए इनके पिताजी जेल गए थे। इतने में एक बच्चा बोल पड़ा, अंकल क्या आपके पापा चोर थे – बच्चे की माँ ने उसका मुंह पकड़ा और इधर मुख्य अतिथि थोड़ा सहम गए परंतु उनकी मुखमुद्रा देखकर ऐसा लगा कि जैसे बच्चे द्वारा कही गई बात सच हो।

खैर कार्यक्रम प्रारंभ हो गया। बच्चे अपने गीत प्रस्तुत करने लगे। बच्चों के साथ तबले व हारमोनियम पर साथ देने वाली शिक्षिकाओं को आज अपने हुनर दिखाने का मौका

मिला था। शिक्षिकाएं बेहद मोटी व बेडौल थी परंतु अपने आस–पास पुरुषों की उपस्थिति उन्हें रोमांचित कर रही थी। देखने में तो वे ऐसी लग रही थी जैसे वे रावण के परिवार की हों तथा इस भारतभूमि का टूर करने आई हों व शीघ्र ही लंका वापस चली जाएंगी। देखने में भयावह, कठोर तथा वातावरण को भारी बनाने वाली ये शिक्षिकाएं जब बच्चों का नाम बुलाती थी तो नाम बुलाने पर छोटे बच्चे जिस तरह से उनके सम्मुख आकर अपनी कविता करना भूल जा रहे थे इससे यह भी सिद्ध हो गया कि इन दोनों के क्लास के बच्चे आधे ही पास क्यों होते हैं। मुख्य अतिथि मंद–मंद मुस्कुरा रहे थे परंतु बच्चों की संख्या अधिक थी उनका निरंतर मुस्कुराना अब उन्हें ही कष्टकारी साबित हो रहा था। थोड़ी ही देर बाद जब बच्चों ने गाना बंद कर दिया तो तब उनका मुंह टेढ़ा ही रह गया, अब हँसने की बारी बच्चों व महिलाओं की थी। इससे कुछ महिलाओं ने तो अब मुख्य अतिथि को बुराभला कहना शुरू कर दिया तथा कुलीन महिलाओं ने मुख्य अतिथि के इस व्यवहार पर रोष जताया। अतिसुन्दर महिलाएं स्वयं शर्मसार हो गई।

बच्चों के गायन के बाद बड़े लोगों की बारी आई। इससे अधिकांश संख्या महिलाओं की थी, जो देश को आजादी दिलाने में महिलाओं के योगदान की बात करते – करते संसद में महिला आरक्षण की बात करने लगी। शर्मा जी जो अपनी पत्नी के बारे में कहा करते थे कि बहुत सीधी व बोलना तक नहीं आता है आज अपनी पत्नी का भाषण सुनकर उनके रोंगटे खड़े हो गए। मेरे पड़ोसी की पत्नी जब पुरुषों द्वारा महिलाओं पर हो रहे अत्याचार का मुकाबला करने का आहवान कर रही थी तब सभा में बैठे कई पुरूष चुपचाप घर की ओर चल पड़े।

महिला भाषण से पूरा माहौल जोशपूर्ण हो गया तथा इसकी चरमपरिणति उस समय देखने को मिली जब मिसेज वर्मा जो बहु सज्जनता व सहजता के साथ इन ओजपूर्ण भाषणों को पिछले आधे घंटे से सुन रही थी वे एकाएक उठी व थोड़ी दूर बैठे अपने पतिदेव के गर्दन पर सवार हो गई। डरपोक पुरूषों ने उन्हें दुर्गा का अवतार बताकर उनके चरण छुए तब जाकर उनका क्रोध शांत हुआ। मिसेज वर्मा के इस क्रोध को देखकर कई महिलाएं उठ खड़ी हुई जिससे पुरूषों में भगदड़ मच गई तथा जो बैठी रही वे दांतपीस रही थी या मुंह टेढ़े–मेढ़े बना रही थी। काफी समझाने व राणाप्रताप, शिवाजी, सुभाषचन्द्र बोस जैसे वीरों के कारनामों की याद दिलाने के बाद पुरूष घरों से वापस लौटे।

अब पुरूषों की बारी थी उन्होंने सबको समान अधिकार देने की बात कही तथा महिलाओं को मां के रूप में देखने को कहा। इससे सुंदर व कम उम्र की महिलाएं नाराज हो गई तथा उठकर घर की तरफ जाने लगी उनके जाने के साथ आधे पुरूष उनके पीछे हो लिए तथा अब पार्क में मुख्य अतिथि व बच्चे रह गए।

बाकी बचे लोग मुख्य वक्ता के भाषण की प्रतीक्षा में बैठे रहे। जैसे ही मुख्य वक्ता ने बोलना शुरू किया तथा एक आदर्श चरित्र के निर्माण करने तथा इससे पूरे राष्ट्र को संसार के मानचित्र पर सर्वोच्च स्थान पर प्रतिष्ठित करने की सलाह दे रहे थे उसी समय एक बच्चा उनका थैला लेकर फरार हो गया, बाद में पता चला कि मुख्य अतिथि महोदय ने अब तक दो–तीन कार्यक्रमों की अध्यक्षता की थी। कार्यक्रम समापन के बाद जलपान की व्यवस्था होती थी दांत न होने के कारण वे जलपान कर नहीं पाते थे इसलिए अपने थैले में रख लेते थे। वह बच्चा तभी से उनके पीछे लगा था तथा जब तक उसने उन मिठाइयों को उनसे आजाद नहीं कर लिया तब तक दम नहीं लिया। मुख्य अतिथि ने भी माइक छोड़ उसके पीछे भागने की कोशिश की वे गिर पड़े तथा राम–राम कहते उठे।

अंत में 'राष्ट्रगान' के साथ ही 15 अगस्त का कार्यक्रम समाप्त हो गया तथा सब लोग उस नाश्ते की ओर बढ़ गए जैसे वहां ने जाने पर अनुपस्थिति दर्ज हो जाती। जिसके जी में जो आया वह खाया, जल्दी–जल्दी खाया तथा कुछ और भी है एवं रात का भी कुछ इंतजाम है पूछते हुए लोग घर की ओर प्रस्थान कर रहे थे। खाते समय, बात करते हुए कुछ लोगों को मैंने यह गाते सुना 'अपनी आजादी को हम हरगिज भुला सकते नहीं' तथा 'देख तेरे इंसान की हालत क्या हो गई भगवान कितना बदल गया इंसान' का गीत हमारे देश के चारित्रिक विकास की संपूर्ण कहानी बयां कर रहा था।

हमें भी बनना है ट्रैफिक इंस्पेक्टर

सुयश जायसवाल
पुत्र श्री संजय कुमार जायसवाल, अ.अधिकारी
उत्तरी क्षेत्र, तुगलकाबाद

मेरे पापा जब भी जाना हेलमेट पहन कर आना तुम,
मम्मी स्कूल मुझे जब लेने आना, हेलमेट पहनकर आना तुम,
कार से लेने जब भी आना, सीट बेल्ट जरूर लगाना तुम,
हम बच्चे हैं भारत की शान, ट्रैफिक इंस्पेक्टर बनकर बनाएंगे देश का मान।।

आजकल ट्रैफिक नियमों में हुए बदलाव के कारण ट्रैफिक नियम तोड़ने वालो पर लगने वाले जुर्माने की राशि कई गुना बढ़ा दी गई है साथ ही, जेल जाने का प्रावधान भी लागू हो गया है। इन बातों का मैंने मन ही मन चिंतन किया कि क्यों ना मैं भी ट्रैफिक इंस्पेक्टर की जिम्मेदारी निभाऊं जिससे परिवार और देश दोनों की सेवा कर सकूं। जब भी मम्मी या पापा गाड़ी ड्राइव करने के लिए घर से बाहर निकलते हैं तो मैं उन्हें ट्रैफिक नियम फॉलो करने की याद जरूर दिलाता हूं मैंने यह बात कक्षा के सभी छात्रों को भी बताई। सभी मेरे विचार से सहमत भी हुए और सभी छात्रों ने उसी दिन से ट्रैफिक इंस्पेक्टर बनने की जिम्मेदारी निभानी शुरू भी कर दी।

हेलमेट की याद – घर से निकलने से पहले मम्मी या पापा को हेलमेट पहनने के लिए कहना। कभी–कभी हमारे फ्रेंड जल्दी के कारण हेलमेट हाथ में ही लेकर चल देते हैं। उन्हें हमें याद दिलाना चाहिए कि हेलमेट सिर पर पहनने की चीज़ है ना कि हाथ में लेने की।

रेड लाइट पर ध्यान– जब मैं मम्मी–पापा के साथ गाड़ी में बैठता हूं तो रेड लाइट जंप ना करने की बात जरूर याद दिला देता हूं चाहे कितनी ही देर क्यों ना हो रही हो, पुलिस वाले अंकल हो या नहीं या फिर सड़क खाली हो या नहीं। रेड लाइट फॉलो करने की आदत तो होनी ही चाहिए।

मोबाइल पर बातें बिल्कुल ना करना – ड्राइव करते समय पापा या मम्मी को इस बात के लिए मैं हमेशा सचेत करता हूं कि मोबाइल पर बातें बिल्कुल ना करें। अगर बहुत जरूर लगे तो गाड़ी साइड में रोककर बात करें। ड्राइविंग के दौरान एक जरा सी चूक भारी पड़ सकती है और किसी की जान भी जा सकती है।

सीट बेल्ट का ध्यान– जब कभी मैं गाड़ी में अपने माता–पिता के साथ बैठता हूं तो सीट बेल्ट की याद जरूर दिलाता हूं। वैसे भी झटका लगने पर सीट बेल्ट काफी हद तक बचाव करती है।

डाक्यूमेंट्स रिमाइंडर– जब कभी वह लोग बाइक या कार चलाने के लिए निकलते हैं तो मैं उन्हें ड्राइविंग लाइसेंस, आरसी, इंश्योरेंस, पोलूशन कंट्रोल सर्टिफिकेट के डॉक्यूमेंट साथ रखने याद दिला देता हूं।

अंतः हम सभी बच्चे इन छोटी–छोटी बातों का ध्यान अपने अपनों को दिलाकर देश के प्रति बड़ी जिम्मेदारी निभा पाएंगे और तभी हम फर्क के साथ कह पाएंगे।

"सुरक्षा नियमों का करेंगे हम सम्मान
ना होगी कोई दुर्घटना ना होंगे हम परेशान"

जीवन एक मौका

शालिनी रंजन
पुत्री श्री राजेश रंजन,
व.कार्यपालक (वा.एवं परि.)
उत्तर मध्य क्षेत्र, दादरी

कुछ कर दिखाने का
जीवन एक मौका है
मुश्किलों से लड़कर मंजिल पा लो राही
तुम्हें किसने रोका है।

सोना भी अग्नि में तपकर
निखर जाता है,
बिना कष्ट झेले तो
वह भी अनमोल नहीं बन पाता है।

मुश्किलों से हताश होकर
अपने सपनों का दमन ना कर
उठ अपनी क्षमताओं के बल पर
अपनी मंजिलों को हासिल कर।

तिनके–तिनके से चिड़िया
अपना घोंसला बनाती है
क्या असफलता की सोच में
वह हौसला हार जाती है?

अपने हौसलों को बुलंद कर
रास्ता बन जाएगा
अंधकार भरी राहों में भी
एक दीपक जल जाएगा।

परिणाम की चिंता क्यों करता है?
कर्मठ की ही सफलता है
धैर्य से अपना कर्म तू कर
जीवन को अपने सफल तू कर।

मेरी टीचर

युवान
पुत्र श्री शिशुपाल राय
वरिष्ठ प्रबंधक (इंजी.)
उत्तरी क्षेत्र, तुगलकाबाद

मेरी टीचर, सबसे अच्छी टीचर।
पढ़ाती एक समान, न बनती टीजर।

Simple, Soft उसका व्यवहार।
हम सबको करती खुलकर प्यार।

हम सब करते उसका आदर।
उनको भेंट करते अच्छी चादर।

जब हम सब मिलकर लंच करते,
तब भी हमारा ध्यान रखती।

होमवर्क जब पूरा नहीं होता,
तब वो ही उसे पूरा कराती।

ऐसी है हमारी टीचर, मेरी टीचर।
सबसे आगे, सबसे अच्छी, मेरी टीचर।

वृक्ष

अभय कुमार
पुत्र श्री राजेश कुमार,
उप महाप्रबन्धक (लेखा)
उत्तरी क्षेत्र

आओ सब मिलकर वृक्ष लगाएँ
स्वच्छ सुरक्षित वातावरण बनाएँ।
प्रदूषण का हरण करें
स्वस्थ जीवन का वरण करें।
हरा रंग प्रतीक स्वास्थ्य का
हरा रंग प्रतीक खुशियों का
हरा रंग प्रतीक समृद्धि का
इस हरे रंग को धरती पे बिछाएँ
आओ मिल कर वृक्ष पेड़ लगाएँ।
प्रकृति ने हमें ये वृक्ष दिये
पुरखो ने उन्हें घना किया
हमने उन्हें काट–काट कर
धरती को क्या बना दिया।
प्रकृति के इस अनमोल रत्न को
अपने वंशजो के लिए बचाएं
आओ मिल कर वृक्ष लगाएँ।

क्रिसमस

कु. सृष्टि तिवारी
पुत्री श्री विजयंत तिवारी,
उप.प्रबंधक(ले.)
उत्तरी क्षेत्र

क्रिसमस आया क्रिसमस आया,
क्रिसमस पर हमने क्रिसमस ट्री सजाया।
सेंटाक्लॉज ने दी आवाज
जिंगल बैल्स बज रहे है
साल खत्म हो रहा है
हमसे मिलने सेंटा आया,
ढेर सारे उपहार लाया,
हमने जोर–जोर से गाना गाया,
सेंटा आया, सेंटा आया,
गिफ्ट लाया, गिफ्ट लाया,
हमने सबको मैरी क्रिसमस भिजवाया,
क्रिसमस आया क्रिसमस आया,
क्रिसमस पर हमने क्रिसमस ट्री सजाया।

निराशा छोड़ो, काम करो

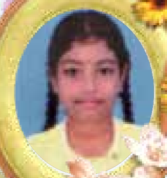

एम. हरिनी श्री
पुत्री श्री आर. मीनाक्षी सुंदर
स. अधिकारी,
दक्षिणी क्षेत्र, चैन्ने

जिस प्रकार रात और दिन से संसार बना है उसी प्रकार आशा–निराशा भी जीवन के अनिवार्य अंग हैं। आशा के समय प्रसन्न होना स्वाभाविक है किंतु, निराशा के समय सहज बने रहना बहुत कठिन है। होता यह है कि निराशा के समय या अवसर पर मनुष्य का आत्मविश्वास डगमगा जाता है। घबराहट और पराजय व्यक्ति को बिखेर देती है। ऐसे समय में व्यक्ति को यह संसार बेकार लगने लगता है। वह संघर्ष और कर्म करना त्याग देता है। इससे, उसकी निराशा गहरी होती है। सच्चा सशक्त मानव वही है जो निराशा से न घबराए। वह उससे उबरने का उपाय सोचे। वह निरंतर निराशा से जुझता रहे और तब तक संघर्ष करता रहे। जब तक उसके अंधेरे नष्ट न हों। जो रात के समय निराश होकर सो जाता है, उसकी अगली सुबह भी निराशा से भरी ही रहती है, वास्तव में, निराशा के दौर में किया गया कर्म ही अगली सुबह का जन्मदाता होता है।

अतः जिसे अच्छी सुबह चाहिए हो तो, रात के घनघोर अंधेरे में भी उसे कर्म करना चाहिए। लक्ष्यप्राप्ति का यही मूल मंत्र है। मित्रों, निराशा छोड़िए, काम करें, आशा का दामन थामिए, निराश व्यक्ति हमेशा भाग्य को कोसता है। समझ जाओ कि वह कर्म से बचता है, ऐसे में उसे कोई पसंद नहीं करता। सफलता भी उससे दूर भागती है। आपको हर काम में सफलता मिलेगी और आप निराशा से मुक्ति पा खुशहाल जीवन व्यतीत करने लगेंगे! तभी तो कबीर ने कहा हैः–

**"सुखिया सब संसार है, खायै अरू सोवै।
दुखिया दास कबीर है, जागै अरू रोवै।"**

मेरा प्यारा भारत देश

काव्या
पुत्री श्री रविकांत भूषण
वरिष्ठ सहायक, एफएचईएल

मेरा प्यारा भारत देश
सबसे न्यारा हमारा देश
रंग बिरंगे फूल खिले हैं
गुलदस्ता सा है मेरा देश
मेरा प्यारा भारत देश।।

मेरा प्यारा भारत देश
लिखित संविधान वाला मेरा देश
विभिन्न धर्मों का मेरा देश
एक बगीचे सा है मेरा देश
मेरा प्यारा भारत देश।।

मेरा प्यारा भारत देश
सबसे खूबसूरत मेरा देश
कई ऋतुएँ हैं यहाँ
सतरंगीं सा है मेरा देश
मेरा प्यारा भारत देश।।

मेरा प्यारा भारत देश
कई राज्यों से बना हमारा देश
कई भाषाओं वाला हमारा देश
हिंदी राजभाषा वाला मेरा देश
मेरा प्यारा भारत देश।।

परी

गुनगुन
पुत्री श्रीमती वीना अश्विनी
कनिष्ठ अधिकारी (राजभाषा)
निगमित कार्यालय

उसकी हल्की सी मुलायम हँसी, मुझे जिंदगी जीने का सबब देती है
बल्कि उसकी हर बात मुझे कुछ खास करने की वजह देती है।

उसके होने से घर के आँगन में चाँदी सी चमक लगती है
बल्कि उसकी हर बात मुझे सरगम सी सुरीली लगती है।

वो एक उजली किरण है मेरे आंगन की, जो रोशनी बनकर मेरे घर छाई है
या कुछ यूँ कहूँ कि वो एक फरिश्ता है जो बेटी बनकर मेरे घर आई है

उसके सरल सवालों पर मैं हंस देती हूँ कभी–कभी
पर उससे कैसे कहूँ कि वो मुझे मेरे खास होने का अहसास दिलाती है।

कभी करती है जब बाते वो कुछ बड़ों जैसी
तो वो मुझे खुद को उससे कुछ कम होने का आभास दिलाती है।

अगर कभी रूठ जाती है जो वो मुझसे कभी
तो वो मुझे मेरे अधूरे होने का अहसास दिलाती है।

यूँ ही कहते है लोग कि बेटियाँ बोझ होती है
बल्कि वो परी तो मुझे घर को मंदिर होने का अहसास दिलाती है।

मेरी बेटी सुश्री गुनगुन कुमारी सहित सभी बेटियाँ को समर्पित

इस तिमाही के साहित्यकार

जयशंकर प्रसाद

जयशंकर प्रसाद का जन्म 30 जनवरी, 1889 को वाराणसी, उत्तर प्रदेश में हुआ था। इनकी मृत्यु 14 जनवरी, 1937 को वाराणसी में हो गई थी। जयशंकर प्रसाद के पिता का नाम देवीप्रसाद साहु था और जब प्रसाद जी बारह वर्ष के थे तभी उनके पिता का देहांत हो गया था। प्रसाद जी की आरंभिक शिक्षा घर पर ही प्रारंभ हुई थी। वह हिन्दी के छायावादी युग के चार प्रमुख स्तंभों में से एक हैं। उन्होंने हिंदी काव्य में छायावाद की स्थापना की और खड़ी बोली को काव्य की सिद्ध भाषा बना दिया। उन्होंने अपने 47 वर्ष के जीवन में कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास और आलोचनात्मक निबंध आदि की विभिन्न विधाओं में रचनाएं की हैं। सन् 1912 ई. में 'इंदु' में उनकी पहली कहानी 'ग्राम' प्रकाशित हुई। प्रसाद जी ने कुल 72 कहानियाँ लिखी हैं। उनकी अधिकतर कहानियों में भावना की प्रधानता है। प्रसाद जी की कहानियाँ भावनाओं की मिठास तथा कवित्व से पूर्ण हैं।

प्रमुख कृतियां:

कविता संग्रह : छाया, प्रतिध्वनि, आकाशदीप, आंधी, इंद्रजाल

उपन्यास संग्रह : कंकाल, तितली, इरावती

कहानी संग्रह : कानन कुसुम, महाराणा का महत्व, झरना, आँसू, लहर, कामायनी, प्रेम पथिक

नाटक संग्रह : स्कंदगुप्त, चंद्रगुप्त, ध्रुवस्वामिनी, जन्मेजय का नाग यज्ञ, राज्यश्री, कामना, एक घूंट

पुरस्कार एवं सम्मान : प्रसाद जी को कामायनी पर मंगलाप्रसाद पारितोषिक प्राप्त हुआ था।

प्रियतम!

क्यों जीवनधन ! ऐसा ही है
न्याय तुम्हारा क्या सर्वत्र ?
लिखते हुए लेखनी हिलती,
कँपता जाता है यह पत्र।
औरों के प्रति प्रेम तुम्हारा,
इसका मुझको दुःख नहीं।
जिसके तुम हो एक सहारा,
वही न भूला जाय कहीं।
निर्दय होकर अपने प्रति,
अपने को तुमको सौंप दिया।
प्रेम नहीं, करूणा करने को,
क्षण–भर तुमने समय दिया।
अब से भी वो अच्छा है,
अब और न मुझे करो बदनाम।
क्रीड़ा तो हो चुकी तुम्हारी,
मेरा क्या होता है काम ?
स्मृति को लिये हुए अन्तर में,
जीवन कर देंगे निःशेष।
छोड़ों, अब दिखलाओ मत,
मिल जाने का यह लोभ विशेष।
कुछ भी मत दो,
अपना ही जो मुझे बना लो, यही करो।
रक्खो जब तक आँखो में,
फिर और ढार पर नहीं ढरो।
कोर बरौनी का न लगे हाँ,
इस कोमल मन को मेरे।
पुतली बन कर रहें चमकते,
प्रियतम ! हम दृग में तेरे।।

कहानी

जैनेंद्र कुमार

जैनेंद्र कुमार का जन्म 2 जनवरी 1905 में अलीगढ़ के कौड़ियागंज गांव में हुआ। उनके बचपन का नाम आनंदीलाल था। इनकी मुख्य देन उपन्यास तथा कहानी है। इनके जन्म के दो वर्ष पश्चात इनके पिता की मृत्यु हो गई। इनकी माता एवं मामा ने ही इनका पालन–पोषण किया। इनके मामा ने हस्तिनापुर में एक गुरुकुल की स्थापना की थी। वहीं जैनेंद्र की प्रारंभिक शिक्षा–दीक्षा हुई। इनकी उच्च शिक्षा काशी हिंदू विश्वविद्यालय में हुई। सन् 1921 से 1923 के बीच जैनेंद्र ने अपनी माता की सहायता से व्यापार किया, जिसमें इन्हें सफलता भी मिली, परंतु सन् 1923 में वे नागपुर चले गए और वहाँ राजनीतिक पत्रों में संवाददाता के रूप में कार्य करने लगे। उसी वर्ष इन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और तीन माह के बाद यह छूट गए। दिल्ली लौटने पर इन्होंने व्यापार से अपने को अलग कर लिया। जीविका की खोज में ये कलकत्ते भी गए, परंतु वहाँ से भी इन्हें निराश होकर लौटना पड़ा। इसके बाद इन्होंने लेखन कार्य आरंभ किया। 27 दिसंबर 1949 को इनका निधन हो गया।

प्रमुख कृतियां

उपन्यास : परख, सुनीता , त्यागपत्र, कल्याणी आदि।

कहानी संग्रह : फांसी, वातायन, नीलम देश की राजकन्या, जैनेन्द्र की कहानियां(सात भाग) आदि।

निबंध संग्रह : जड़ की बात, मंथन, पूर्वोदय, ये और वे आदि।

पुरस्कार एवं सम्मान : हिन्दुस्तानी अकादमी पुरस्कार, 1929 में 'परख' (उपन्यास) के लिए पद्म भूषण।

कहानी का सार

"फोटोग्राफी" का शौकिया फोटोग्राफर – कथानायक रामेश्वर एक सुंदर, युवा मां के मचले हुए अल्पायु बेटे को झूठमूठ अपने कैमरे से बहलाते हुए एक विचित्र संबंध बना लेता है पर अपने झूठ से एक नैतिक संकट में भी फंस जाता है। साथ ही पत्रिका में जयशंकर प्रसाद की कविता को भी स्थान दिया गया है।

जैनेंद्र घटनाओं के कहानीकार नहीं है, यदि हैं भी तो घटनाएं उनके यहां "घटकर" स्थितियां बन जाती हैं। जिन पर अंततः जैनेंद्र प्रकट या प्रच्छन्न टिप्पणी करते हैं। वह टिप्पणी लगभग हमेशा एक नैतिक समझ, एक मानवीय करुणा तथा एक मनोवैज्ञानिक दृष्टि से उपजती है।

फोटोग्राफी

1

बहुतेरा पढ़ने–लिखने के बाद और मां के बहुत कहने–सुनने पर भी जब रामेश्वर को कमाने की चिंता न हुई, तो मां हार मानकर रह गई। रामेश्वर की बाल–सुलभ प्रकृति चाहती थी कि रुपए का अभाव तो न रहे पर कमाना भी न पड़े। दिन का बहुत–सा समय वह ऐसी ही कोई जुगत सोचने में बिता देता था। खर्च के लिए रुपए मिलने में कुछ हीला–हवाला होते ही, वह अपने को बड़ा कोसता था, बड़ा धिक्कारता था, मन–ही–मन प्रतिज्ञा करता था कि कल से ही किसी काम में लग जाऊंगा और मां से अनुनय–विनय करने पर या लड़–झगड़कर जब रुपया मिल जाता था, तब भी वह प्रतिज्ञा को भूलना नहीं था, पर जब अगला सवेरा होता तो फिर कोई सहल–सी जुगत ढूंढने की फिक्र में लग जाता।

मां ने भी होनहार को सिर नवाकर स्वीकार कर लिया। इसी तेईस वर्ष के पढ़े–लिखे निर्जीव काठ के उल्लू को, दुलार के साथ अच्छा–अच्छा खिला–पिलाकर पालते–पोसते रहना मां ने अपना कर्त्तव्य समझा।

रामेश्वर बड़े भले स्वभाव का युवक था। उनके चलन में जरा भी खोट न था; पर था वह आनंदी और निश्चिंत स्वभाव का। उसने प्रशंसनीय सफलता के साथ बी.ए. पास किया था, पर वह यह नहीं जानता था कि इस दो शब्द की पूंछ से कहां और किस तरह फायदा उठाया जा सकता है। इस पूंछ के लगने के बाद, एक विशिष्ट गौरव से सिर उठाकर, राह–चलते नेटिव लोगों पर हिकारत की निगाह डालते हुए चलने का अधिकार मिल जाता है – यह भी वह मूर्ख नहीं समझता था।

इस फोटोग्राफी की सूझ के बाद अब वह बिल्कुल ऐरे–गैरे लोगों में अपना कैमरा बांह पर लटकाए और हाथ में स्टैंड को छड़ी के मानिंद घुमाता हुआ कहीं भी देखा जा सकता है। उसकी अपनी खींची हुई अच्छी–बुरी तस्वीरों के संग्रह में आप एक जाट को दिल्ली के चांदनी चौक के फुट–पाथ पर बोतल लगाए सोडावाटर गटकते पा सकते हैं, होली के उत्सव की खुशी में रंग–बिरंगे उछलते–कूदते आठ–आठ दस–दस ग्रामीणों की नाचती हुई उन्मत टोलियां को पा सकते हैं। सारांश यह कि उसके चित्र अधिकतर साधारण कोटि के लोगों में से लिए गए हैं। वह उनसे जितना अपनापा कर सकते हैं, उतना बड़े आदमियों से नहीं।

यहाँ हम यह कह भी देना चाहते हैं कि यह कोई धनिक का पुत्र नहीं है। उसे अपने खर्च के लिए चालीस रुपए मासिक मिलते हैं लड़–झगड़कर दस रुपए मासिक तक और मिल जाते हैं – ज्यादा नहीं। रामेश्वर यह जानता है और वह जहां तक होता है चालीस से अधिक न लेने का ही प्रयत्न करता है। कभी अधिक खर्च होता है, तो वह अपने ऊपर जब्र करके, इधर–उधर के खर्चों से काट–छांटकर पूरा कर लेता है।

2

जब वह अलीगढ़ गया, तो साथ में छह प्लेट ले गया था। पहुंचने के दिन ही उसने छहों खींच डाले। चार संभालकर बेग में रख लिए, दो स्लाइड में ही रहने दिए।

लड़के, जिन्हें प्रकृति ने परमात्मा की तरह निर्दोष बनाकर भी, उनमें ताक–झांक और तोड़–फोड़ की उत्सुकता भरकर शैतान बनाया था, और जिन्हें रामेश्वर ने स्लाइड को हाथ न लगाने की सख्त ताकीद कर दी थी, हठात छेड़छाड़ किए बिना रह न सके। भीतर क्या जादू

है, यह जानने के लालच में उन्होंने स्लाइड खोल डाली, प्लेट का कांच निकाल लिया और पटककर तोड़ दिया।

जब रामेश्वर अलीगढ़ स्टेशन पर दिल्ली जाने वाली एक्सप्रेस के एक ड्योढ़े दर्जे में घुसा, तो एक भरी, एक खाली, दो स्लाइड उसके पास थीं।

गाड़ी चलते ही सामने की बेंच पर एक रूठते हुए बालक की ओर उसका ध्यान गया। उस बालक को केले की आशा दिलाई गई थी; पर केलेवाला खिड़की के पास आया ही था कि गाड़ी चल दी। इस पर बच्चा मचल रहा था।

''क्यों मचल रहे हो, बेटे, अगले स्टेशन पर केले मंगा दूंगी'' – उसकी मां उसे मनाने के लिए कह रही थी।

बच्चा बहुत ही सुंदर था। लाली छाए हुए उसके गोरे–गोरे गाल और माथे के दोनों ओर खेलते हुए उसके टेढ़े–मेढ़े बाल नए फोटोग्राफर को अलौकिक जान पड़े। उसने ऐसा सुंदर बालक कभी नहीं देखा था।

और हां, मां बिल्कुल बालक के अनुरूप थी। वही स्वच्छ खिला हुआ रूप, और वही मधुर आकृति, पर माता में सलज्ज संकोच था, और बालक में लज्जा से अछूता चांचल्य।

बालक मचला हुआ था, किसी तरह नहीं मानता था।

रामेश्वर ने कैमरा खोला। कहा, ''आओ श्याम, तुम्हें एक तमाशा दिखाएं।''

कैमरे को देखते ही बालक श्याम केलेवाले को और केले पर अपने रूठने को भूल गया। तुरंत रामेश्वर की गोद में आ बैठा।

रामेश्वर ने पूछा, ''तस्वीर खिंचवाओगे?''

श्याम ने ताली बजाकर कहा, ''खिंचवाएंगे।''

मां बालक ही प्रसन्नता से खिल उठी और अनायास बोल पड़ी, ''हां, खींच दो।''

रामेश्वर ने बालक को मां के पास बेंच पर बिठाकर अपने कैमरे को ठीक जमाना शुरू किया।

बालक बड़े उल्लास से, एक अद्भुत चीज पा जाने की आशा में कैमरे के लैंस की तरफ एकटक देख रहा था। मां भी यह ध्यान से देख रही थी कि फोटोग्राफी कैसे होती है।

रामेश्वर ने कैमरा ठीक कर लिया। फिर न जाने उसे क्या सूझा कि सकुचाते हुए वह मां से बोला, ''इसमें आपकी भी तस्वीर आ जाती है, कुछ हर्ज तो नहीं?''

मां ने कुछ उत्तर न दिया, उसने बेग में से चश्मा निकालकर पहना और कपड़ों की सलवट ठीक कर बच्चे के पास आ बैठी।

रामेश्वर के पास खाली स्लाइड थी। उसने फोकस लगाया, श्याम को लैंस दिखाकर कह रखा, ''इसमें से चिड़िया निकलेगी।'' फिर नियमित रूप से एक–दो–तीन किया और कह दिया, ''फोटो खिंच गई।''

तमाशा था, खत्म हुआ। रामेश्वर जब कैमरे को बंद करके रख देने की तैयारी में था तो उससे कहा गया, ''लाइए, तस्वीर दीजिए।''

वह बड़ी उलझन में पड़ा। तस्वीर खींची ही कहां थी? वह तो झूठमूठ का तमाशा था। स्लाइड तो खाली थी और तस्वीर खिंचती भी तो, दी कैसे जा सकती थी।? उसे तैयार करने में अभी तो कम–से–कम दो दिन और लगते; पर उसने फिर सुना, ''जितने दाम हों ले लीजिएगा, तस्वीर दे दीजिए।''

उसकी घबराहट बढ़ती जा रही थी। क्या वह कह दे – तस्वीर नहीं खींची गई, यह तो सिर्फ धोखा था और तमाशा था? नहीं, वह नहीं कह सकता। मां ने कितनी उमंग के साथ अपने बालक और अपनी तस्वीर खिंचवाई है! क्या यह सच–सच कहकर उनके मन को अब मार देगा? नहीं, सच बात कहना ठीक नहीं तस्वीर दे दीजिए।''

''देखिए, यह ठीक नहीं है, तस्वीर दे दीजिए।''

रामेश्वर ने कहा, ''तस्वीर अभी कैसे दी जा सकती है? उसे धोना होगा, छापना होगा तब कहीं वह तैयार होगी।''

मां ने कहा, ''धोनी होगी? खैर, हम लाहौर में धुलवा लेंगे।''

रामेश्वर बोला, ''जी नहीं, उसे जरा–सा प्रकाश लगेगा कि वह खराब हो जाएगी।''

अगर सचमुच तस्वीर होती, तो रामेश्वर स्लाइड समेत उसे बिना दाम भेंट करके कितना प्रसन्न होता! पर अब वह मरा जा रहा था। कैसी बुरी विडंबना में फंस गया था वह!

उसे सुनना पड़ा, ''यह ठीक नहीं है! जो हो आप तस्वीर दे दीजिए। हमें यह नहीं मालूम था।''

रामेश्वर क्या कहे! बोला, ''क्या आप यह समझती थीं कि तस्वीर अभी तैयार हो जाएगी, और आपको मिल जाएगी?''

जवाब मिला, ''हमें यह नहीं मालूम था कि तस्वीर आपके ही पास रहेगी।''

रामेश्वर ने कहा, ''इसमें हर्ज ही क्या है?''

महिला अकेली नहीं थी। उनके साथ एक महिला और थी। एक पुरबिया बुड्ढा नौकर था, और कई बाल–बच्चे थे। उन्होंने क्षणभर अपनी साथिन की ओर देखा; देखकर कहा, ''नहीं, नहीं, आप दे दीजिए।''

रामेश्वर अभी तक कभी का दे देता, पर दे तो तब, जब हो। उसने कहा ''देने के माने उसे खराब कर देना है। इससे तो अच्छा उसे तोड़ ही दिया जाए। आप मेरा परिश्रम क्यों व्यर्थ करवाती हैं?''

उन्होंने फिर साथिन की ओर ऐसा देखा, जैसे वह स्वयं रामेश्वर को छुटकारा दे देना चाहती हैं। पर शायद साथिन की ओर से उन्हें संकेत मिला–लाहौर जाकर यह बात छिपी न रहेगी, फिर कैसा होगा? उन्होंने कहा, ''तो तोड़ डालिए।''

रामेश्वर ने सोचा–अगर, कहीं दूसरी महिला भी फोटो में आ गई होती, तो शायद कठिनता न होती। उसने अपील करते हुए कहा, ''जी देखिए, मैं दिल्ली रहता हूँ, आप लाहौर जा रही हैं। मेरा–आपका परिचय भी नहीं है। इस दिन को छोड़कर शायद फिर कभी मिलना भी न होगा। मैं व्यवसायी फोटोग्राफर भी नहीं हूं। आपको मैं वचन देता हूं, मेरे पास तस्वीर रहने में, आपका कुछ भी अहित न होगा।''

मां ने फिर अपनी साथिन की ओर देखा; पर उनकी तो तस्वीर खिंची न थी। मां ने कहा, ''आप अखबार में भेज देंगे, अपने यहां लगा लेंगे।''

रामेश्वर ने तुरंत कहा, ''मैं वचन देता हूं, न मैं लगाऊंगा, ना कहीं भेजूंगा, पर आप मेरा परिश्रम व्यर्थ न कीजिए।''

मां को विश्वास हो चुका था, कि वह बात लाहौर में बालक के पिता तक अवश्य पहुंचेगी। वह बेचारी क्या करती? बोलीं, ''नहीं, आप तोड़ ही दीजिए।''

वह इतना अविश्वासी समझा जा रहा है,इस पर रामेश्वर भीतर से बड़ा घुट रहा था। इच्छा हुई कि सच–सच बात कह दूं, पर ध्यान हुआ–उसे सच कौन मानेगा? मैं कहूंगा, तस्वीर नहीं खींची, सिर्फ बालक को बहलाने को तमाशा किया गया था, तो कोई यकीन न करेगा। वह समझेंगी–मैं तस्वीर रखना चाहता हूँ, इससे झूठ बोलता हूँ और बहाने बनाता हूँ। रामेश्वर को इस लाचारी पर बहुत दुख हुआ; परंतु उसने कहा, ''अगर आप कहेंगी, तो मैं तस्वीर को तोड़ ही दूंगा; पर मैं फिर आपसे कहता हूं, मैं दिल्ली चला जाऊंगा। फिर आपके दर्शन कभी मुझे नहीं होंगे। अगर आपकी तस्वीर मेरे पास रही भी, और मैंने टांग भी ली तो इसमें आपका क्या हर्ज है? देखिए, बालक श्याम का चित्र मेरे पास रहने दीजिए। आपके चित्र के बारे में मैंने आपसे पहले ही पूछ लिया था। आपका यह श्याम मुझे फिर कब मिलेगा? इसके दर्शन को आप मुझसे

क्यों छीनती हैं?''

वह बोली, ''हां, श्याम का चित्र आप दूसरा ले लीजिए।''

किंतु दुर्भाग्य, रामेश्वर के पास खाली प्लेट तो कोई नहीं है। होता तो यह बखेड़ा ही क्यों उठाता? कहा, ''खेद कि मेरे पास खाली प्लेट ही कोई नहीं है।''

जब उसने अपना पीछा छूटते न देखा, तो हार मानकर कहा ''अच्छा लीजिए।'' और भरी स्लाइड को खोल डाला!

उससे कहा गया, ''देखिए, बदल न लीजिएगा।''

''इतना अविश्वास न करें।'' – यह कहकर उसने स्लाइड का प्लेट निकालकर चलती हुई रेल के नीचे छोड़ दिया।

जिनकी फोटो न खिंची थी, उनको शायद संदेह बना ही रहा। रामेश्वर से कहा गया, ''जरा वह दिखलाएं तो, देखें आपने फेंका भी या नहीं?''

रामेश्वर मर–सा गया। उसने उठकर श्याम के सिर पर हाथ रखते हुए कहा, ''बालक के सिर पर हाथ रखकर कहता हूं, मैं इतना असत्यवादी नहीं हूं।'' यह कहकर स्लाइड उसने 'मां' को दे दिया।

स्लाइड को खोलकर, उसके एक–एक हिस्से को ऊँगली से दबा–दबाकर, और हरेक कोना टटोल कर, साथिन महाशया के यह प्रमाण दे देने पर कि जब सचमुच स्लाइड में कोई चीज नहीं है, रामेश्वर के प्रति उनको थोड़ा–थोड़ा विश्वास होने लगा।

रामेश्वर ने अब श्याम से खूब दोस्ती पैदा कर ली, और दिल्ली पहुंचते–न–पहुंचते वह श्याम का पक्का मामा बन गया।

उन्हें आराम से लाहौर की गाड़ी में बिठाकर, उनके पैसों को अस्वीकार करके, श्याम की अम्मा से क्षमा मांगकर, और सोते श्याम का अंतिम चुंबन लेकर, दिल्ली स्टेशन पर जब रामेश्वर उनसे सदा के लिए विदा ले लेने को था कि उससे कहा गया, ''आपने बड़ा कष्ट उठाया। इतनी कृपा और करें कि सवेरे तार दे दें।''

हाथ से एक रुपया रामेश्वर की ओर बढ़ाते हुए मां ने लाहौर का अपना पता लिखवा दिया।

पता लिखते ही रामेश्वर भाग गया। 'यह लेते जाइए' की आवाज उसके पीछे दौड़ी, पर वह नहीं लौटा। स्टेशन के बाहर आते ही, जब मां के नौकर ने उसे पकड़कर रुपया हाथ में थमाना चाहा, तब उसने एक झिड़की के साथ कहा, ''जाओ! रेल पर वे अकेली हैं। कह देना तार सवेरे ही दे दिया जाएगा।''

3

तार–घर खुलते ही लाहौर तार दे देने के बाद रामेश्वर ने सोचा–उसके जीवन का एक पन्ना जीवन–क्रम से अनायास ही अलग होकर, जो एक प्रकार की रसमय घटना से रंग गया है, उसे हठात यहीं अंत करके मुझे अब अगला पन्ना आरंभ कर देना होगा। उसे इस पर दुख हुआ। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में कुछ घटनाएं ऐसी घट जाती हैं, जिनको वह समाप्त कर देना नहीं चाहता, उनका सिलसिला बराबर जारी रखना चाहता है। श्याम को सदा के लिए भुला देना होगा–भाग्य का यह विधान उसे बहुत ही कठोर मालूम हुआ। उसकी इच्छा थी कि उसके जीवन–ग्रंथ के अंतिम पन्ने तक 'श्याम' और श्याम की अम्मा का संबंध चलता रहे टूटे नहीं, परंतु अब उनके बीच में दो सौ पचास से ज्यादा मील का व्यवधान है,– और उनके जीवन की दिशाएं भिन्न होने के कारण, उस व्यवधान को क्षण–क्षण बढ़ा रही हैं।

उसके सामने, मानो जीवन और संसार की शून्यता एक बड़ी–सी निराशा के रूप में प्रत्यक्ष हो गई। कल जो दो व्यक्ति आपस में इस तरह उलझे हुए थे, आज उन्हीं के बीच असंभाव्यता का ऐसा व्यवधान फैला हुआ है कि पुर नहीं सकता। और कल उन्हें एक–दूसरे को भुलाकर अपना समय बिताने की और कुछ तरकीब निकाल लेनी

होगी। श्याम को अपने ''मामा'' को भुलाकर उसके अभाव में ही अपने तक जीवित और प्रसन्न रखना होगा। इसी तरह श्याम को भुलाकर रामेश्वर को भी नित्य नियमित जीवन–कार्य में लग जाना होगा।

कंपनी बाग में सिर झुकाए, लंबे–लंबे डगों से पांच–छह मिनिट सोचते–सोचते इधर–उधर घूमने के बाद, रामेश्वर ने घर आकर मां से कहा, ''अम्मा, जो कहोगी सो करूंगा। आज्ञा हो तो नौकरी कर लूं।''

अम्मा ने कुछ नहीं कहा, बस प्यार किया। उस प्यार का अर्थ था, 'बेटा जो चाहे सो कर। मां के लिए तो तू सदा बेटा ही है।''

और कार्य के अभाव में, रामेश्वर, अनवरत उद्योग से साहित्य–समालोचक और राजनीतिक नेता बन बैठा।

4

लाहौर की जिला–कांफ्रेंस के अध्यक्ष के आसन पर से अपना भाषण समाप्त कर चुकने के बाद, अधिवेशन की पहले दिन की कार्रवाई समाप्त करके जब रामेश्वर अपने स्थान पर आया, तो उसके कोई पंद्रह मिनट बाद उसके हाथ में एक चिठ्ठी दी गई –

''क्या मुझे चार बजे पार्क में मिल सकोगे? – श्याम की अम्मा।''

अलीगढ़ वाले सफर के दिन से तीन सौ पैंसठ के छह–गुने दिन गुजर चुके थे, पर ह्रदय–पटल पर वह दिन जो चिन्ह छोड़ गया था, उसे मिटा न सके थे। इस लंबे काल और उसकी विभिन्न व्यस्तताओं ने उसे शुष्क कर दिया; पर इस पत्र के इन शब्दों ने मानो एकदम उसे फिर हरा कर दिया–उसमें चैतन्य ला दिया।

रामेश्वर ने सोचा, ''श्याम ! – अहा ! वह भी तो साथ होगा!''

समय बिताते–बिताते जब चार बजने पर रामेश्वर पार्क में पहुंचा तो, श्याम की अम्मा उसकी तरफ आ रही थीं।

''तुम्हारा नाम क्या है?''

''रामेश्वर।''

''मैं अब नाम से पुकारूंगी। रामेश्वर, क्या तुम अब फोटो उतार सकते हो?''

रामेश्वर ने देखा, वहीं अम्मा हैं, पर फिर भी कुछ और हैं। उनके इस व्यग्र आग्रह को समझ नहीं पाया, थोड़ा डरने–सा लगा। बोला, ''अभी तो कैमरा नहीं है। अभ्यास भी नहीं है।''

''कैमरा ला नहीं सकते?''

''अभी?''

''हां, अभी!''

''अभी कहां से मिलेगा?''

''क्यों? क्यों नहीं मिलेगा? तुम तो नेता हो, इतना भी नहीं कर सकोगे?''

''जाता हूं–कोशिश करूंगा।'' – रामेश्वर ने बड़ा कड़ा दिल करके कह दिया। रामेश्वर विदा होकर कुछ ही दूर गया होगा कि उन्होंने फिर बुलाकर उससे कहा, 'रामेश्वर सुनो, ये रुपए लो, कैमरा न मिले तो नया खरीद लाओ।''

''नहीं, नहीं...''

''जाओ–अभी जाओ। जल्दी से लाना, नहीं तो तस्वीर नहीं खिंचेगी – रात हो जाएगी।''

रामेश्वर कुछ कह न सका। इस अनुनय–पूर्ण आज्ञा में ऐसा कुछ था, जो अनुल्लंघनीय था। वह चल दिया। मां हत–बुद्धि–सी, पागल–सी निर्जीव–सी वहीं–की–वहीं बैठ गई।

घंटे–भर बाद जब वह कैमरा लाया, मां ने हंसने का प्रयत्न किया! अब तक वह शायद रो रही थीं।

माँ बड़ी सज–धज के साथ आई थीं। जब फोकस ठीक करके रामेश्वर एक दो तीन बोलने को हुआ तो मां ने अपनी सारी शक्ति लगाकर चेहरे पर स्मित हास्य की चमक ले आने का प्रयत्न किया! आह! वह हंसी कितनी रहस्यपूर्ण और कितनी दुखपूर्ण थी! जितना कि उसमें उल्लास प्रकट करने का प्रयास था, उतना ही उसमें विषम पीड़ा का प्रत्यक्ष दर्शन था।

फोटो खिंच चुकने पर वह अपना सारा बल लगाकर बड़ी मुश्किल से संभली रहीं और रामेश्वर के समीप आकर बोलीं, ''एक दिन तुमने श्याम की और मेरी तस्वीर साथ–साथ खींची थी, याद है न? वह मैंने तुड़वा दी थी! क्यों, भूल तो नहीं गए? अब एक काम करोगे?''

रामेश्वर ने मूक दृष्टि में अपेक्षा और उत्सुक–स्वीकृति भरकर माँ को देखा।

''सुनो, मेरा चित्र तैयार करना।'' मां ने भीतर की जेब से एक फोटो निकालकर देते हुए कहा ''और यह लो श्याम का चित्र। इन दोनों का एक चित्र तैयार करना और उसका बड़े–से–बड़ा रूप (enlargement) करके अपने यहां लगा लेना। यह काम तुम्हीं करना, किसी दूसरे को न देना। जानते हो, श्याम तुम्हें प्यार करता था? दिल्ली में जब तुम गए थे वह सो रहा था। जागते ही उसने पूछा–'अम्मा', तछवील वाले मामा कआं एं?'' जानते हो, अब तुम्हारा श्याम कहां है ? क्या ताकते हो? वह मेरी गोद में छिपकर थोड़े ही बैठा है! यहां नहीं, वह बहुत बड़ी गोद में बैठा है। देखते हो यह सब क्या है? – आकाश है। यह आकाश ही परमात्मा की गोद है। श्याम उसी गोद में छिप बैठा है। दिखता भी तो नहीं। देखो, चारों तरफ आकाश है, चारों तरफ देखो, कहीं दिखता है क्या? दिखे, तो मुझे भी दिखाना। मैं भी देखूंगी। चुपचाप ही चला गया। अगर मैं उसे देख पाऊं, तो कहूं–देख तेरा तछवील वाला मामा देख रहा है। .... रामेश्वर, वह तुम्हें याद करता गया है।''

रामेश्वर का गला रूंध रहा था, मानो आंसुओं का घूंट गले में अटक गया हो। मां की बड़ चल रही थी, मानो शरीर की बची–खुची शक्ति एकबारगी ही निकलकर खत्म हो जाएगी।

''जानते हो–यही चौथी मार्च का दिन था, इसी दिन, इसी वक्त वह गया था। मैं साल–भर से इसी चौथी मार्च को भटक रही थी। सोच रही थी–तुम मिलोगे तो तस्वीर खिंचवाऊंगी, तुम मिल गए, तस्वीर खिंच गई। दोनों को मिलाकर तुम एक तस्वीर बनवाओगे न? देखो, जरूर बनाना। मैं कहती हूं, जरूर बनाना, बड़ी–से–बड़ी बनाना और अपने कमरे में लगाना। जहां चाहे भेजना, अखबारों को भेजना, मित्रों को भेजना। जहां दिखें, श्याम और श्याम की अम्मा साथ दिखें। अब जा रही हूँ, उसी के पास जा रही हूँ–सदा उसी के पास रहने जा रही हूँ।''

मां की हालत शब्द–शब्द पर क्षीण होती जा रही थी। मां ने कहा, ''सुनो, एक साल हुआ, मैं विधवा हो गई। वह भी चौथी ही तारीख थी। चौथी तारीख और मार्च का महीना। आज की यह चौथी मार्च का दिन मेरे जीवन की अंतिम साध का अंतिम दिन है। आज मुझे भी अंतर्हित हो जाना है। मैंने जहर खाया है, तीन घंटे होने आए हैं, अब जहर की अवधि का अंतिम क्षण दूर नहीं है। मैं फिर दुनिया में न रहूंगी।''

रामेश्वर के देखते–देखते मां की देह निष्प्राण होकर गिर पड़ी।

लेखकी और लीडरो को गड्ढे में डाल रामेश्वर फिर भूली हुई अपनी फोटोग्राफरी के ज्ञान को चेताने लगा। साल–भर में वह श्याम और श्याम की अम्मा का पूर्णाकार चित्र तैयार कर पाया। जिस कमरे में वह चित्र लगा, वह उसके आत्मचिंतन का कमरा बन गया। वहां और चित्र न रह सकता था।

फोटोग्राफी को ही उसने अपना व्यवसाय और ध्येय बनाया। थोड़े ही समय में वह मार्के का फोटोग्राफर हो उठा।

सभी बढ़िया अखबारों में श्याम और उसकी अम्मा का वह चित्र निकला, और सभी में उसकी सराहना हुई।

विभागीय गतिविधियां

निगमित कार्यालय

दिनांक 1.01.2020 को निगमित कार्यालय में नव वर्ष के उपलक्ष्य पर सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को संबोधित करते हुए अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक।

कॉनकॉर की सीएसआर गतिविधियां

कॉनकॉर की सीएसआर गतिविधियों के अंतर्गत इंडियन कैंसर सोसायटी द्वारा कैंसर की प्रारंभिक जांच हेतु स्क्रीनिंग सराय काले खां, निजामुदीन, नजफगढ़, नई दिल्ली आदि में लगाए गए कैंपो की झलकियां।

कॉनकॉर की सीएसआर गतिविधियां

कॉनकॉर की सीएसआर गतिविधियों के अंतर्गत महावीर इंटरनेशनल द्वारा आईसीडी दादरी में हैल्थ कैंप का दृश्य।

चंदौली, उत्तर प्रदेश में कॉनकॉर की सीएसआर गतिविधियों के अंतर्गत दिव्यांगजनों को सहायक उपकरण वितरित करने हेतु कैंप का दृश्य।

इंसानियत कहां है?

आक्शा जोनेजा
सुपुत्री श्री गेब्रियल जोनेजा,
टर्मिनल मैनेजर, लुधियाना

आज जगह जगह
कचरे के ढेर हैं,
जहां एक समय सुनाई देता था
पक्षियों का मधुर गीत,
आज वहीं पर
गाड़ियों की आवाज है।

इंसानियत आज कब्र में मरी पड़ी है,
लोग खुद की भूख मिटाने,
गूंगे जानवरों की जान बेच रहे है,
जान कम थी,
आज लोग जल बेचते है।

कुदरत की देन का फायदा उठाते हैं
और कमी पड़ने पर ऊपर वाले को कोसते हैं
इन्सानों से अब मेरा एक ही सवाल है
तेरी इंसानियत कहां है?

राजनीतिक उठापटक

पूर्णेन्दु कुमार श्रीवास्तव
वरिष्ठ कार्यपालक
उत्तरी क्षेत्र, तुगलकाबाद

पढ़ना लिखना बिना लक्ष्य के
दौड़ लगाना बिना लक्ष्य के,
मात्र निरर्थक ज्ञान है
यह सब का हिंदुस्तान है।

निराधार ज्यामिति कब फलती
गलत सोच नित करती गलती ,
हार–जीत कैसा अनुमान है
यह सब का हिंदुस्तान है।

जनता है सब जानती है
सही नेता पहचानती है,
खींचतान में चादर फटती
उठापटक बेजान है
यह सब का हिंदुस्तान है।

नियम–कानून बहुमत के हवाले
दलगत नीति हो निजी हवाले,
न्यायपालिका अगर झुके ना
लग जाए कूटनीति पर ताले
जड़ी भूत अभिमान है
यह सब का हिंदुस्तान है।

देख परख कर सदा चलो जी
ऊंच–नीच पथ कदम संभालो,
हर पल धोखे और फरेब हैं
पथ के इरादे निशदिन पालो,
राजनीति में ईमान है
यह सब का हिंदुस्तान है।

आनंद

ज्योति
सहायक कार्यपालक(हिंदी)
निगमित कार्यालय

आत्माराम के घर जब तीसरी संतान के रूप में बेटा पैदा हुआ तो सारा घर खुशियों से चहक उठा। दो बेटियों के बाद बेटा होने से कौशल्या भी फूली न समाती थी। खुश होने का अवसर भी था। लोग आत्माराम को बधाई देने लगे और कौशल्या को गांव की अन्य महिलाओं ने घेर लिया तो कुछ महिलाएं कौशल्या के इस भाग्य पर दुखी भी हुई। आत्माराम की मां, जिसे गांव वाले काकी कहकर पुकारते थे, उसके तो पांव ही जमीं पर नहीं पड़ रहे थे, वह बहुत खुश थी। आसपास की बूढ़ी औरतें भी उसे बधाई दे रही थीं जिसे वह पूरी विनम्रता व मुस्कुराहट के साथ स्वीकार कर रही थी। कोई भी व्यक्ति उसकी खुशी को उसके चेहरे से पढ़ सकता था। वह मन ही मन भगवान महादेव को याद कर रही थी जिनके आशीर्वाद से उसके घर में यह खुशी का मौका आया था। बिना किसी विलंब के स्नान कर वह तुरंत भगवान महादेव के मंदिर उनके दर्शन करने हेतु चल पड़ी।

शाम होते–होते आत्माराम के घर सोहर से गाने की आवाज आने लगी। घर में खूब नाच गाना हुआ और करीब एक हफ्ते तक पूरा गांव खुशियों में डूब गया। रोज सुबह गांव के बड़े बुजुर्ग आत्माराम के घर आते, बधाई देते, मुंह मीठा करते और लौट जाते।

कौशल्या ने जब अपने बच्चे का मुंह देखा तो बच्चे को देखती रह गयी। एकदम गौर वर्ण, स्वस्थ शरीर, चंचल आंखें, छोटे–2 बाल, मुलायम त्वचा सब मिलकर शिशु ने उसमें ऐसा जादू कर दिया कि वह आनंदित हो उठी और इसी कारण उसने बेटे का नाम आनंद रख दिया। आनंद सचमुच आनंद देने वाला था। मां, बाप, दादा, दादी सबका प्यारा था आनंद। गांव की हर औरत उसे पाना चाहती थी। उधर कौशल्या और उसकी सास आनंद को हमेशा बुरी नजरों से सुरक्षित रखने का हर पल प्रयास करती रहती तथा एक बड़ा काला टीका उसके माथे पर लगाकर रखती थी। गांव की हर औरत आनंद को भरपूर एक निगाह देखने, उसे गोद लेने का असफल प्रयास करती रहती थी। दिन प्रतिदिन जैसे–जैसे आनंद बड़ा हो रहा था घर में सबके सुख का साधन बन गया था। सभी उसे प्रेम करते थे। वह सभी का प्यारा था।

कहते हैं अधिकता किसी भी चीज की अच्छी नहीं होती है। वही हाल आनंद के बारे में था। जैसे–जैसे आनंद बड़ा होता गया उसने यह महसूस किया कि उसकी हर उचित अथवा अनुचित मांग माता पूरी कर देती है तो उसने अपनी इच्छाएं बढ़ा दी। यदि कोई इच्छा उसकी पूरी नहीं होती तो वह दादी का सहारा लेता था जो इन अवसरों की ताक में रहती थी और उसकी इच्छा पूरी करने में आह्ललाद महसूस करती थी। इसी अनियंत्रित प्रेम से आनंद के स्वभाव में जिद्द से अपनी इच्छाएं पूरी कराने का स्थायी स्वभाव पैदा हो गया।

शुरू–शुरू में तो परिवार के हर सदस्य ने उसकी हर अनुचित/उचित इच्छाओं की पूर्ति की परंतु जब अनुचित इच्छाओं की संख्या उचितों की संख्या से आगे बढ़ गई तो धीरे–धीरे परिवार के सदस्य कौशल्या को अपनी नाराजगी दर्ज कराने लगे परंतु बाल प्रेम में पगी कौशल्या ने इस पर विशेष ध्यान नहीं दिया तथा सभी से यह कह कर कि अभी बच्चा है, नादान है, नासमझ है, धीरे–धीरे कुछ सुधर जाएगा कहकर मूल प्रश्न टाल जाती थी जिससे आनंद की अनुचित इच्छाएं पुष्ट होती गई। आत्माराम यदि क्रोधित भी होते तथा उसे शारीरिक दंड देने की बात कहते तो कौशल्या अड़ जाती और इस तरह से आनंद की अनुचित गतिविधियों को खूब फलने–फूलने का अवसर मिला। आत्माराम भी मन

मसोस कर रह जाता।

पढ़ने–लिखने में होशियार आनंद अधिक पढ़ाई न कर सका। कारण, परिवार में कुछ इस तरह का व्यवधान उपस्थित हुआ कि आत्माराम का अपने गृहनगर से दूर तबादला हो गया तथा चाहते हुए भी वे हमेशा एक निश्चित समय से अधिक समय गृह नगर में नहीं रह पाते थे। पिता की उपस्थिति से घर में एक मनोवैज्ञानिक दबाव बना रहता है। बच्चे नियंत्रित रहते है। कारण, वे जानते हैं कि घर में कोई उनकी गतिविधियों पर नजर रखे हुए है। पिता की अनुपस्थिति से आनंद की अवांछित गतिविधियों को और बढ़ावा मिला तथा कौशल्या भी या तो उसके कृत्यों से आंखे फेर लेती थी अथवा केवल कुछ कड़े शब्द सुनाकर चुप रह जाती थी। बहुत अधिक परेशान होने पर वह पिता के आने पर सब कुछ बता देने की धमकी देती थी परंतु जैसे ही कुछ दिन बीतता कौशल्या का मोह आनंद के लिए बढ़ जाता है और आनंद की गलतियां भूल जाती अथवा उसकी गलतियां उसे मामूली लगने लगती थी और आत्माराम के वापस आने तक वह उन्हें एक चौथाई गलतियां ही बताती थी। आत्माराम भी उसे डांट–डपट कर अपने कर्तव्यों की पूर्ति कर लेते थे। ऐसे में आनंद पूरे परिवार के कष्ट का कारण बन गया। उसने परिवार के हर सदस्य को पीड़ा पहुंचाई। आत्माराम मामले की गंभीरता को समझते थे तथा एक बार उसे खूब धमकाया भी परंतु घर से दूर कार्यस्थल होने के कारण वह बहुत कठोर कदम नहीं उठा सके। धीरे–धीरे आनंद परिवार में आतंक का पर्याय बन गया। क्या बड़ा, क्या छोटा, क्या अपना, क्या पराया सभी आनंद से आतंकित थे। शुरू–शुरू में जब आनंद अपने से बड़ों के साथ दुर्व्यवहार करता तो कौशल्या दबे मन से उसे स्वीकार कर सुख का अनुभव करती परंतु कुछ दिनों बाद आनंद कौशल्या की भी बातें अनसुनी करने लगा तब जाकर कौशल्या की आंखें खुली। जब तक अपने पर कष्ट नहीं पड़ता तब तक इंसान को इसकी पीड़ा नहीं समझ में आती है। अब कौशल्या आनंद के व्यवहार से तिलमिला उठती परंतु वह बेबस थी। धीरे–धीरे समय बीतता गया और आनंद के व्यवहार में कोई परिवर्तन नहीं आया। आनंद के आचरण की बातें घर की चार दीवारी से निकलकर रिश्तेदारों में जा पहुंची। सब ने एकमत से आनंद का विवाह कराने की सलाह दी। आत्माराम को भी बात ठीक लगी। फिर देखते ही देखते आनंद की शादी कर दी गई तथा सुंदर बहू घर में आ आई। बहू के सुशील व शिक्षित होने से आनंद के ऊपर उसका असर पड़ना प्रारंभ हो गया। मां–बाप ने सोचा कि शायद अब आनंद दुनियादारी के चक्कर में उलझ जाएगा तथा गंभीरता, सरसता, नम्रता जैसे अन्य गुण उसके स्वभाव में पनपेंगे और ऐसा हुआ भी। धीरे–धीरे आनंद के स्वभाव में परिवर्तन आने लगा। वह पहले से अधिक संवेदनशील हो गया। गंभीरता उस पर अपने पांव पसारने लगी तथा आनंद अब अपनी पुरानी हरकतों को याद कर लज्जा का भी अनुभव करता था। अब वह परिवार के सदस्यों पर प्यार छिड़कने लगा। परिवार के सुख–दुख में वह सब से पहले खड़ा दिखाई देता था। उसे दुनियादारी के संबंधों का एहसास हो रहा था। समय बीतने के साथ उसे दो संतानें भी हो गई जिससे आत्माराम और कौशल्या का मन उनमें लगा रहता था तथा परिवार फिर से सुखमय ढंग से चलने लगा।

इधर आनंद को एक कंपनी में नौकरी मिल गई तथा अपने परिश्रम व लगन से कंपनी में भी वह अपने वरिष्ठों का प्रिय हो गया। उसकी पदोन्नति हो गई। उसकी आमदनी भी बढ़ गई। अच्छी आमदनी होने के कारण आनंद एक शानदार जीवन जीने लगा तथा बेहिसाब पैसे खर्च करने लगा। आत्माराम कभी कभार उसकी फिजूलखर्ची से चिंतित होकर उसे समझाने का प्रयास करते परंतु धन के साथ संयम का मेल कहां आता है, ऐसे में आनंद आत्माराम की बातें अनसुनी कर देता था, उधर आत्माराम और कौशल्या ने भी इस बारे में अधिक हस्तक्षेप न करने में ही अपनी भलाई समझी। कुछ दिनों बाद आनंद ने एक गाड़ी भी खरीद ली। सुख किसे अच्छा नहीं लगता है और युवावस्था के सुख का तो क्या कहना। आनंद और उसकी पत्नी भौतिक सुखों को भोगने में जुट गए पर क्या किसी को इससे भी तृप्ति मिली है। भौतिक सुख केवल अपना दास बनाते हैं और इनमें थोड़ी सी कमी मन को विचलित कर देती है तथा जीवन कष्टकारी हो जाता है। समय परिवर्तनशील है। एक जैसा समय कभी भी नहीं रहता है और यह बात राजा और रंक सभी पर एक समान रूप से लागू होती है। इसी बीच आनंद की कंपनी को घाटा

हुआ जिससे कंपनी ने अपने कर्मचारियों की कुछ सुविधाएं घटा दी। ऐसे में कम धन का प्रभाव आनंद के भी जीवन पर पड़ा परंतु जब मनुष्य एक बार अपनी आवश्यकताएं बढ़ा लेता है तो उसे कम करने में बड़ी असुविधा महसूस होती है। कारण सुविधाएं बढ़ाना तो आसान है पर घटाना बहुत ही मुश्किल।

ऐसा ही कुछ आनंद के साथ हुआ। ऐसे में आनंद के स्वभाव में चिड़चिड़ापन दिखाई देने लगा तथा वह बहुत जल्द ही अपना आपा खोने लगा। प्राइवेट नौकरी में कार्य पूरा करने के लिए हमेशा सिर पर तलवार लटकती रहती है जबकि सरकारी नौकरी में लक्ष्य की प्राप्ति करना ऐच्छिक होता है। सरकारी नौकरी में जहां व्यक्ति निश्चित रहता है वही प्राइवेट में अनिश्चितता उसका हमेशा पीछा करती रहती है। अधिक काम, कम आय, बढ़ा हुआ खर्च इन तीनों में सामंजस्य न होने के कारण आनंद का स्वभाव एक बार पुनः परिवर्तित होने लगा। छोटी–छोटी बातों में गुस्सा करना, अपने साथियों पर बरस पड़ना अब आनंद का स्वभाव बन गया। कौशल्या व आत्माराम से भी अब वह बेरूखी से बातें करता जिससे वे भी दुखी होते। आत्माराम और कौशल्या आनंद के व्यवहार में हो रहे इस परिवर्तन से चिंतित रहते परंतु आनंद अपने व्यावसायिक जीवन में आ रहे परिवर्तनों की माता–पिता से चर्चा नहीं करता था। अतः वे भी उसके स्वभाव में आ रहे परिवर्तन का मूल कारण नहीं जान सके, केवल अनुमान ही लगाते रहे। चिंता बढ़ी वह अलग से। आत्माराम और कौशल्या दिन–रात आनंद के बच्चों को संभालते तथा छाया की भांति उनका लालन–पालन करते तथा उनके सुख–दुख में ही अपना सुख–दुख समझते।

इधर आनंद के बदलते व्यवहार से कौशल्या भी थोड़ी चिड़चिड़ी हो उठी। अच्छे कर्म के बाद उसका परिणाम अच्छा न मिलने पर व्यक्ति निराश हो उठता है। परिणामस्वरूप, कौशल्या अब आनंद की पत्नी में खोट निकालने लगी तथा हर बात पर टीका–टिप्पणी करने लगी। यौवन जहां बेलगाम आगे भागता है वहीं वृद्धावस्था व्यक्ति को संयम के साथ जीने की शिक्षा देती है। इधर अतिशय सुख ने आनंद की पत्नी को भी कुछ शिथिल कर दिया था। सुख में कमी जहां व्यक्ति को सक्रिय और चौकन्ना बनाए रखती है वहीं सुख की अधिकता व्यक्ति में शिथिलता और आलस्य पैदा करती है। आनंद के बदलते व्यवहार के चलते कौशल्या अब आनंद की पत्नी के कार्यों में कमी निकालने लगी। इस तरह से घर में तनाव का माहौल रहने लगा। कभी–कभी कौशल्या कुछ अप्रिय बोलती तो आनंद की पत्नी केवल सुनकर दुखी होती पर जबाव न देती।

जब व्यक्ति किसी के बारे में नकारात्मक विचार रखता है तो उसे उस व्यक्ति में केवल दोष ही दिखाई देते हैं। दोष देखने से व्यक्ति उससे मानसिक रूप से दूर होने लगता है तथा उसके प्रति प्रेम का स्थान घृणा ले लेती है। ऐसा ही कुछ कौशल्या के साथ हुआ। आखिर एक दिन किसी बात पर विवाद हो गया। आनंद भी घर पर था। दोनों ने एक दूसरे के प्रति कठोर वचनों का प्रयोग किया। सब ने अपनी–2 मर्यादाएं तोड़ दी। किसी ने भी सदभाव नहीं दिखाया। आनंद जो अपनी नौकरी से पहले ही परेशान था, घर की इस अनावश्यक बक–बक से उसने भी कौशल्या को भला बुरा कहा तो बात आत्माराम तक जा पहुंची। आत्माराम ने आनंद को समझाने की कोशिश की। पर आज तो आनंद का विवेक जैसे जवाब दे गया था। वह कुछ भी सुनने के लिए तैयार न था। आज उसे सुनाना था। परिणाम वहीं हुआ जो अप्रिय था। आनंद ने घर छोड़ने का फैसला कर लिया तथा शाम होते–होते आनंद ने परिवार समेत घर छोड़ दिया। अब आत्माराम व कौशल्या अकेले रहते हैं। बच्चों के बिना घर अब कौशल्या और आत्माराम को काट खाने को दौड़ता है। उनके जीवन में सूनापन उतर आया है। उदासी व्याप्त रहती है। आनंद के बच्चों का कलरव, उनकी शैतानियां अब उन्हें याद आती हैं परंतु उनकी स्मृतियां ही शेष हैं। अब वे उनके पास नहीं हैं। आत्माराम और कौशल्या अकेले रहते हुए भी उस आनंद को खोज रहे हैं जो उन्हें कभी आनंदित करता था, हर्षित करता था, जो सरल, विनम्र और सहृदय था तथा आगे चलकर बुढ़ापे में उनका सहारा बनता। उधर आनंद भी माता–पिता के सर्वक्षमाशील और मृदु व्यवहार से वंचित होकर वैसा ही स्नेह और प्रेम पाने की तमन्ना मन में लिए उदास मन से बोझिल एकाकी जीवन जी रहा है।

काश ! मैं स्कूल नहीं जाता

नितेश भूषण
पुत्र श्री जगभूषण शर्मा
हिंदी अधिकारी, उत्तरी क्षेत्र

काश ! मैं स्कूल नहीं जाता।
तो बेरोजगारों की संख्या में,
एक और अंक
कदापि नहीं बढ़ पाता ।1।

न ही मुझमें अहम पनपता,
न ही मुझमें वहम उभरता,
न ही मुझमें लालच आता,
काश! मैं स्कूल नहीं जाता ।2।

स्कूल जाने से हुई सोच मेरी छोटी,
हर परीक्षा में आगे रहने की
होड़ जो नाहक ही उपजी।
समस्त वसुंधरा को ही
अपना कुटुंब मानने वाले
एकल परिवार में कैसे हुए राजी ।3।

सूर, कबीर और तुलसी ने भी,
किया था स्कूल से किनारा।
एकमात्र कारण रहा जो मैंने जाना,
उन्होंने अपनी सोच को ही उभारा ।4।

मिल–जुल रहो, एकजुट रहो,
प्रसिद्धि, धन–लोलुपता से दूर,
संदेश नहीं दे पाता
काश! मैं स्कूल नहीं जाता ।5।

आदिकाल से भारत की अर्थव्यवस्था,
बागवानी, खेती–बाड़ी और
पशुपालन पर देती जोर।
आर्य सभ्यता का मूल आधार यही,
कर्म प्रधान बना रहे देश,
बेवजह क्यों मचाएं शोर ।6।

लौटकर आओ फिर,
वहीं जगाओ सपना।
जो भी मिले, लगाओ गले,
जैसे हो कोई अपना ।7।

सर्वधर्म सदभाव की
एक यही उन्नत सोच,
अब मैं पनप नहीं पाता,
काश! मैं स्कूल नहीं जाता ।8।

मैं इंसान हूँ

नजमुन नवी खां 'नाज'
व. कार्यपालक (प्र.सू.प्र)
निगमित कार्यालय

मौलवी के लिये हिन्दू
पंडित पूछे तो मुसलमान हूँ
भूख जिसका मजहब
रोटी वेद पुराण है
मैं इंसान हूँ
पग–पग में संघर्ष करते हुये
आधी अधूरी जिंदगी की मिसाल हूँ
मैं इंसान हूँ
भीड़ में खुद का वजूद तलाशने को
बेताब हूँ
मैं इंसान हूँ
दूसरे के दुख को अपनाने को रहता
तैयार हूँ
टूट गया पर पैसों के लिए जो ना
बिका
वो ईमानदारी की मिसाल हूँ
हाँ मैं इंसान हूँ

मेरा मानना है

गिरिजा शंकर,
व. कार्यपालक (वि. एवं ले.),
उत्तरी क्षेत्र, तुगलकाबाद

मन सुंदर होना चाहिए,
भले ही तन सुंदर न हो,
मेरा मानना है ....
विचार सात्विक होने चाहिए,
भले ही उससे अर्थ की प्राप्ति न हो,
मेरा मानना है ....
व्यवहार सदैव संयमित होना चाहिए,
भले ही स्वयं को क्षणिक कष्ट हो,
मेरा मानना है ....
प्रत्येक को कर्त्तव्यनिष्ठ होना चाहिए,
भले ही अधिक परिश्रम करना पड़े,
मेरा मानना है ....
मातृभूमि के प्रति प्रथम दायित्व–बोध,
धर्म चाहे कोई भी हो,
मेरा मानना है ....
संस्थान के प्रति सत्यनिष्ठ,
कार्य–क्षेत्र भले ही कोई हो,
मेरा मानना है ....
राजभाषा हिंदी में कार्य–व्यवहार,
अनुभाग चाहे कोई भी हो,
मेरा मानना है ....

दो कलियाँ

कीर्ति
पत्नी श्री रविकांत
सहायक प्रबंधक (वा.एवं प्रशा)
उत्तरी क्षेत्र, तुगलकाबाद

मेरे उपवन में दो कलियाँ खिलीं,
देखकर मेरा मन हुआ प्रफुल्लित ।
एक को 'सीरत' कहकर पुकारा,
दूसरी को 'गुरीत' उल्लिखित ।1।

जीवन हुआ सार्थक, साकार मेरा,
खेलता भरा–पूरा परिवार मेरा ।
नीली छतरी वाले से वंदन यही,
कलियों को मिले दुलार पूरा ।2।

अब जीवन लक्ष्य यही, साधना यही,
पढ़ाऊँ इन्हें रहीम, तुलसी और सूर ।
शिक्षा–दीक्षा, कुल की संस्कार रीतियाँ,
करूँ पालन–पोषण, खिलाऊं भरपूर ।3।

रहमत होगी उसकी, मेहनत मेरी,
जीवन साथी की सेहत भी जरूरी ।
वरदान एक यही है मांगा, जो पूरा होगा,
कलियाँ खिलें, दुनिया हो रौशन पूरी ।4।

मोबाइल चोर

सुभाष चंद्र
व.सचिव, उत्तरी क्षेत्र

उक्त विषय से,
क्या सोच लिया सर,
मैं क्या मोबाइल चोर,
जी नहीं, सत्य तथ्य है
मोबाइल ही है चोर
चोर भी अत्यंत घनघोर।।

एक–एक करके सुनाऊंगा आज,
मोबाइल चोर की कहानी,
अब यह नहीं कोई गुप्त बात,
बन चुकी है घर–घर की कहानी।।

बच्चों का मैदान चुराया,
पति–पत्नी का समय चुराया,
केलकुलेटर का मान घटाया,
घड़ी को दर–दर फिकवाया,
कैमरा भी लगभग निपट गया,
पत्र व्यवहार तो पूरा सिमट गया,
क्या सुनोगे मोबाइल चोर की कहानी,
एक हथेली में जहां सिमट गया।।

HR प्रबंधन में M की भूमिका

सुखविंदर
वरिष्ठ कार्यपालक
निगमित कार्यालय

**'कभी धूप दे कभी बदलियाँ, दिलों जाँ से दोनों कुबूल हैं,
मगर उस महल में कैद न कर, जहाँ जिंदगी की हवा न हो।'**

हमारे देश के महान अर्थशास्त्री चाणक्य ने 'अर्थशास्त्र' नामक अपने महत्वपूर्ण ग्रंथ में कहा है कि किसी भी व्यवसाय या संस्थान की सफलता मजबूत नींव पर टिकी होती है। नींव जितनी मजबूत होगी संस्थान भी उतना ही सुदृढ़ होगा। हमारी दृष्टि, हमारी प्रतिबद्धता हमारा उद्देश्य ये सभी तत्व मिलकर समन्वित रूप से हमारे संस्थान की नींव को मजबूत बनाते हैं। आखिर नींव के इन मजबूत स्तंभों पर ही तो विशाल संस्थानों का निर्माण होता है जो देश की समृद्धि में अपना उल्लेखनीय योगदान देते हैं। इस नींव का पहला स्तम्भ HR होता है।

तो आईए, संस्थान के महत्वपूर्ण स्तंभ HR में M की भूमिका पर चर्चा करते हैं। यह सर्वविदित है कि किसी भी संस्थान में HR की भूमिका सर्वोपरि होती है और इसमें भी M शब्द से शुरू होने वाले चार पारिभाषिक शब्दों की भूमिका उल्लेखनीय होती है।

पहले M से तात्पर्य मैनपावर से है अर्थात जनशक्ति। जनशक्ति जो प्रशिक्षित, कुशल, निपुण और कर्मठ होने के साथ–साथ निष्ठावान हो तभी कोई संस्थान प्रगति पथ पर आगे रह सकता है।

दूसरे 'एम' से तात्पर्य मशीन से है अर्थात, इस बारे में यहां पर विशेष चर्चा करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि इसकी महता से सभी परिचित हैं। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि हमारे कारखानों या संयंत्रो में जो मशीनें लगी हैं, वे उच्च कोटि की हों। उनका निर्माण राष्ट्रीय/अन्तरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप हो।

तीसरा 'एम' से तात्पर्य मनी या धन व कर्मचारियों को मिलने वाले वेतन व परिलब्धियों से संबंधित है। यह मानी हुई बात है कि जब कर्मचारियों को अच्छा वेतन और सुविधाएं नहीं मिलेंगी तब वे कैसे किसी संस्थान में टिके रह सकते हैं। अब वह जमाना तो नहीं रहा जब 'भूखे भजन न होय गोपाला, ले लो अपनी कंठी माला' कहा जाता था। अब तो कोई भी जानकार कार्मिक बेकार नहीं रहता क्योंकि यदि बाजार में एक ओर बेकारी, बेरोजगारी और छंटनी की समस्या है तो अच्छे कर्मचारियों का टोटा भी है। यदि आपके पास हुनर है तो आज आप बेकार बैठे नहीं रह सकते। यही कारण है कि अच्छी–अच्छी कंपनियाँ कैंपस रिक्रुटमेंट करके मेधावी छात्रों व अच्छे कार्मिकों को अपने यहां नियुक्त कर रही हैं।

अतः अपने कार्मिकों को अपने यहां बनाए रखने के लिए संस्थानों को आकर्षण बनाए रखना होगा। यह आकर्षण पदोन्नति, आकर्षक वेतनमान व परिलब्धियों के साथ–साथ परिवार के साथ रहने के लिए क्वार्टर, बच्चों की शिक्षा के लिए उत्कृष्ट विद्यालय तथा चिकित्सा हेतु अच्छे अस्पताल के रूप में भी हो सकता है।

चौथे 'एम' से तात्पर्य 'मैनेजमेंट' (प्रबंधन) से है। यह मानी हुई बात है कि किसी भी संस्थान की सफलता या असफलता उसके उच्च प्रबंधन (टॉप मैनेजमेंट) पर टिकी

होती है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि 'मैनेजमेंट' वह बल (फोर्स) है जो पूरी गति या वेग से किसी संस्था या संगठन को संचालित करता है। मानव संसाधन प्रबंधक को यह स्मरण रखना होगा कि संस्थान के कार्मिकों की प्रतिभाओं के विकास में संबंधित कर्मचारी के 'अच्छे व्यक्तित्व' के महत्व को न तो नकारा जा सकता है, अथवा न ही कम करके आँका जा सकता है।

यदि संस्थान के उद्देश्य सही हों, काम करने का तरीका उपयुक्त हो, कर्मचारियों की प्रतिभा को विकसित और पल्लवित करने की दिशा में संस्थान द्वारा ईमानदारी से प्रयास किया जाता हो, दूसरे संस्थानों के मुकाबले वहाँ वेतन एवं अन्य सुविधाएं अधिक दी जाती हों तो प्रबंधन को अपने कर्मचारियों का विश्वास व समर्थन प्राप्त होगा एवं कार्मिकों को उस संस्थान में काम करने में न केवल अच्छा लगेगा बल्कि उनके मन में अपने संस्थान व उसके प्रबंधन के प्रति आदर एवं सम्मान का भाव भी बना रहेगा। जो निःसन्देह ही कार्मिकों को उस संस्थान से जुड़े रहने के लिए अभिप्रेरित करेगा। मशहूर शायर बशीर बद्र के शब्दों में–

'दुआ करो कि ये पौधा सदा हरा ही लगे,
उदासियों में भी चेहरा, खिला खिला ही लगे।'

सदभावना और समभाव

मीनाक्षी
पत्नी श्री धनंजय कुमार
कनिष्ठ कार्यपालक (इंजी.)
उत्तरी क्षेत्र, तुगलकाबाद

आवश्यकता है, आवश्यकता है,
आवश्यकता है पुरजोर, घनघोर।
सदभावना और समभाव की,
हर कोई दे रहा है जोर ।।

समाज में ये कैसा बदलाव,
केवल पैसा ही बना पैमाना।
सामाजिकता को क्यूं नकारा
क्यूं बदल रहा है जमाना ।।

एक दूसरे का सम्मान करें,
यही तो बचपन से सीखा ।
हर किसी का सहयोग करें
माँ–बाप और गुरुजी से सीखा ।।

पारस्परिक सदभावना की मिसाल,
मेरा भारत, जहाँ में बना विशाल ।
वसुधैव कुटुंबकम की यहां देते दुहाई
गंगा–जमुनी तहजीब की जलती मशाल ।।

नया विचार आया

सविता
पत्नी श्री संदीप कुमार
क. कार्यपालक (वि. एवं ले.)
उत्तरी क्षेत्र, तुगलकाबाद

आज क्या नया विचार आया !
हिंदी भाषी हो मेरा हमसाया।
विज्ञापन में जब यह कहलवाया
Response जबरदस्त आया।।

नहाने से बनती निर्मल काया
हिंदी अभ्यास को न टरकाया।
निरंतर जब मैंने रामधुन गाया
तब जाकर हिंदीभाषी बन पाया।।

हिंदी भाषा की महिमा न्यारी
अच्छी लगती सबको फुलवारी।
सरल, सुबोध इसकी वाणी
गुण गाते हैं सब नर–नारी।।

देवनागरी लिपि इसका आधार–पाया
अंकप्रणाली को आर्यभट्ट ले आया।
हिंदी प्रयोग बने जन–जन का साया
संकल्प लेने का नया विचार आया।।

कॉनकॉर का हिन्दी गीत

सी गोपालाकृष्णन
सहायक अधिकारी (लेखा)
दक्षिणी क्षेत्र, चेन्नई

हमें गर्व रहेगा हर दम,
कॉनकॉर के विशिष्ट अंग हैं हम!

अभिमान रहेगा हमको सदा,
राष्ट्र–सेवा का अवसर, हैं प्राप्त हमें।
विकास के पथ पर बढ़ते जाने को,
साहस व श्रम का पाठ हैं ज्ञात हमें।।

हम ना ही थकेंगे, ना ही रुकेंगे,
ख्याति और विश्वास कमाएंगे हम।
विषम परिस्थिति चाहे जैसी हो,
एकजुट हो अनुकूल बनायेंगे हम।।

नवरत्न से महारत्न तक,
कॉनकॉर को ले जाएंगे हम।
शीघ्र ही पूरे विश्व में बंधु,
कॉनकॉर का परचम लहराएंगे हम।।

हमें गर्व रहेगा हर दम,
कॉनकॉर के विशिष्ट अंग हैं हम!

सत्य की खोज में, लगा दिया जब ये जीवन

अनीता माखिजानी
पत्नी श्री राजेश माखिजानी
उप प्रबंधक (वा. एवं परि.),
उत्तरी क्षेत्र, तुगलकाबाद

सत्य की खोज में, निर्विकार साधना में
लगा दिया जब ये जीवन।
तब शून्य हो गया अहसास
पता ही नहीं अब चलता,
कहाँ और क्यों हुई चुभन।।

फिर एक दिन, बहुत सारी हिम्मत जुटाकर
सीध–सीधे सत्य से ही पूछ लिया
ऐ सत्य तू कहाँ मिलता है
क्या कोई तेरा स्थाई पता है
क्यों मुझसे बन बैठा है अनजान
आखिर क्या है तेरा ठौर–ठिकाना।

कहाँ–कहाँ नहीं ढूंढा तुझको
पर तू न कहीं मिला मुझको
ढूंढा ऊँचे–ऊँचे मकानों में।
बड़ी–बड़ी दुकानों में, स्वादिष्ट पकवानों में
चोटी के धनवानों में।।
वो भी तुझको ही ढूंढ रहे थे
बल्कि अब वे मुझसे ही पूछ रहे थे
क्या आपको कुछ अता–पता है
ये सत्य आखिर रहता कहाँ है?

मेरे पास तो असत्य का ही पता था,
फिर सत्य का कहाँ होता
जो केवल सुबह ही नहीं
शाम को भी कहीं
अनायास मिल जाता था।।
परेशान होकर जब
मैंने गुमशुदगी की शिकायत
नजदीकी थाने में जा लिखवाई।
पर हाय री मेरी किस्मत
मेरी ये कोशिश भी काम न आई।।

बचपन में तो मिल जाया करता था
कभी–कभी तो दिनभर
मेरे साथ रहा करता था
पर जबसे मैं बड़ी हो गई हूँ
सत्य पराया सा हो गया है।
यूं कहें कि जुदा ही हो गया है।।
पर एक दिन अकस्मात
दिल से आवाज ये आई
हर पल तेरे संग–संग
हर कदम तो रहता हूँ
और अक्सर तुझसे कहता हूँ
मैं तो हूँ बस, एक पावन अहसास।
अब बंद कर दे, तू मेरी तलाश।।

बहुत अनुनय विनय के बाद
सत्य ने फिर अपना पता बताया
न तो साधु संत की कुटिया में
न मंदिर में, न मस्जिद में
न गुरुद्वारे में, न गिरजाघर में
मिलूंगा तो बाल– गोपाल में
या हर माँ के दिल में, या फिर
बस अपने दिल में झांक कर देखो
वहीं मिलूँगा, बस याद कर के देखो।

निष्कर्ष यही, जीवन का सार यही
संबंधों को कभी काटो मत, जोड़ो करके सीवन।
सत्य की खोज में, अब लगा दिया ये जीवन।।

हमारी कुछ चुनौतियां

सलोनी खिन्द्री
पुत्री श्रीमती शिल्पा खिन्द्री,
सहायक प्रबंधक, उत्तरी क्षेत्र

समय बहुत बलवान है। मानव को सफलता की सीढ़ी चढ़ने एवं अपनी समस्याओं के समाधान के लिए समय का सदुपयोग करना आवश्यक है। हमारे जीवन में जो भी कठिनाइयां आती हैं, समय का उचित प्रयोग करके उनका समाधान किया जा सकता है। समय का सदुपयोग करना एक बहुत बड़ी चुनौती है। समय के सदुपयोग द्वारा कीर्ति, यश, सफलता, प्रसन्नता, समृद्धि, विकास एवं उन्नति प्राप्त की जा सकती है। सफल एवं महान व्यक्ति कभी भी अपने समय को व्यर्थ नहीं करते हैं। इसी कारण से वे इतिहास के पन्नों में अपना स्थान बना पाते हैं। समय के महत्व को न पहचानने वाले व्यक्ति ही इधर–उधर ताकते हैं तथा समय को 'बुरा समय' कहकर अपने मन को ढांढस बंधाते हैं। इसलिए समय का सदुपयोग करना मानव के सामने एक बहुत बड़ी चुनौती है।

यदि हम अपने आसपास दृष्टि डालें तो हमें वातावरण प्रदूषित जान पड़ता है जिसके फलस्वरूप शुद्ध वायु, शुद्ध भोजन, शुद्ध जल एवं शांत वातावरण का अभाव प्रतीत होता है। कारखानों का कर्णभेदी शोर तथा काला धुंआ, मोटरों/ट्रकों आदि का शोर, कूड़े–करकट के ढेर, स्वच्छ जल का अभाव, नदियों, झीलों एवं तालाबों के पानी में गंदगी के पाए जाने के कारणों से प्राकृतिक संतुलन प्रभावित होता है। स्वच्छता अभियान, गीला एवं सूखा कचरा अलग–अलग पेटियों में डालना, प्लास्टिक का दुरूपयोग रोकना आदि कई कदम उठाए जा रहे हैं। इनके अतिरिक्त प्रत्येक व्यक्ति को इस दिशा में सावधानी बरतनी चाहिए तथा अपना पूरा सहयोग देना चाहिए।

वातावरण में बढ़ता तापमान अर्थात ग्लोबल वार्मिंग विश्वभर में चर्चा का विषय बना हुआ है। बढ़ते तापमान के कारण जीवन का अस्तित्व खतरे में पड़ गया है। वायुमंडल में कई प्रकार की घुली गैसों की बढ़ोतरी हो रही है जिसके कारण कई नई बीमारियां उत्पन्न हो रही हैं। खाद्यान्नों की कमी हो रही है क्योंकि प्राकृतिक आपदाएं जैसे कहीं बाढ़ तो कहीं तूफान आते हैं। बेमौसम की बरसात, गर्मियों में अधिक गर्मी तथा सर्दियों में अधिक सर्दी देखी जा रही है। ग्लोबल वार्मिंग का प्रभाव कम करने के लिए स्थायी समाधान खोजना वर्तमान में एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। इस दिशा में कई सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाएं कार्य कर रही हैं। इनके अतिरिक्त, निजी स्तर पर भी नागरिकों को सहयोग देना चाहिए।

बेरोजगारी की समस्या भी देश के लिए एक चुनौती है। सामाजिक सुधार के लिए यह एक खतरा बनी हुई है। बेरोजगारी का मुख्य कारण लोगों में गरीबी, पिछड़ापन, विफलता, दण्डनीय अपराधों का होना आदि कारण है। बेरोजगारी की समस्या किसी वर्ग, जाति या समाज की नहीं है। पढ़े–लिखे लोगों की संख्या अधिक है परंतु उनकी योग्यताओं के अनुपात में नौकरियों की कमी है। रोजगार पैदा करने के अवसर, जनशक्ति नियोजन, हस्तकला, व्यावसायिक शिक्षा, स्वयं के रोजगार, कुटीर उद्योग आदि कुछ ऐसे उपाय हैं जो रोजगारी की समस्या को दूर करने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

‘मधुभाषिका के रचनाकार कृपया ध्यान दें’

त्रैमासिक गृह पत्रिका **‘मधुभाषिका’** का प्रकाशन राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने के लिए किया गया है। इसमें प्रकाशन हेतु कॉनकॉर परिवार के सभी अधिकारियों, कर्मचारियों एवं उनके परिवार के सदस्यों से हिंदी में मूल रूप से लिखे लेख, तकनीकी लेख, कविताएं संस्मरण, कहानी, यात्रा वृत्तांत तथा बच्चों द्वारा लिखित लघु लेख, कविता आदि फोटो सहित (केवल बाल खंड हेतु) आमंत्रित है। पत्रिका में सम्मिलित प्रत्येक रचना को मानदेय दिया जाता है। इसके अतिरिक्त, उत्कृष्ट लेख, कविताओं को पुरस्कृत भी किया जाता है।

लेखकों से अनुरोध है कि केवल वे अपनी मौलिक रचनाएं ही हमें भेजे तथा साथ ही उसका प्रमाणपत्र भी संलग्न करें कि ‘‘भेजी गई रचनाएं मेरी मौलिक एवं अप्रकाशित है।’’ आप अपनी रचनाएं jyoti@concorindia.com, dheeraj@concorindia.com पर ई–मेल भी कर सकते हैं

संपादक

भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल भाषाएं

1. असमिया	6. कोंकणी	10. तेलुगू	14. बोडो	18. मैथिली
2. हिंदी	7. गुजराती	11. नेपाली	15. मणिपुरी	19. संथाली
3. उर्दू	8. उड़िया	12. पंजाबी	16. मराठी	20. संस्कृत
4. कन्नड़	9. तमिल	13. बंगाली	17. मलयालम	21. सिंधी
5. कश्मीरी				22. डोगरी

अंक: 46 – अक्तूबर 2019 की पुरस्कृत रचनाएं।

लेखक/लेखिका नाम व पदनाम	लेख/कविता का शीर्षक	पुरस्कार का नाम	पुरस्कार राशि (रू)
श्री शैलेश कुमार पंडित, कार्यपालक, उत्तर मध्य क्षेत्र	अधूरा सर्वे	प्रथम	2000/–
श्री मधुमिता जायसवाल, पत्नी श्री संजय जायसवाल, उत्तरी क्षेत्र	मां का बजट	द्वितीय	1500/–
श्रीमती सुष्मिता सिंह, उप प्रबंधक, उत्तरी क्षेत्र	बालिका शिक्षा से सामाजिक उत्थान	तृतीय	1000/–
श्रीमती सोनल नायर, कार्यपालक, उत्तर पश्चिम क्षेत्र	एंटीक	प्रोत्साहन	800/–
श्री श्रेय शर्मा, पुत्र श्री धीरज शर्मा, व.कार्यपालक, निगमित कार्यालय	मां से अच्छी दादी मां	प्रोत्साहन	800/–

पाठकों के पत्र

RAILTEL

इरकॉन इन्टरनेशनल लिमिटेड

IRCON INTERNATIONAL LIMITED

दिनांक: 17.12.2019

19.12.2019

एमडीआई गुडगाँव में आयोजित 5वें वार्षिक लीडरशीप कॉन्क्लेव 2019 कार्यक्रम में 'डिजिटल लीडरशीप' विषय पर व्याख्यान देते हुए श्री वी.कल्याण रामा, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक ।

दिनांक 26.12.2019 को निगमित कार्यालय में "कार्यालयी कार्यों में हिंदी का प्रयोग" विषय पर आयोजित हिंदी कार्यशाला में अधिकारियों को संबोधित करते हुए श्री संतोष कुमार झा, मुख्य राजभाषा अधिकारी।

कॉनकॉर
CONCOR

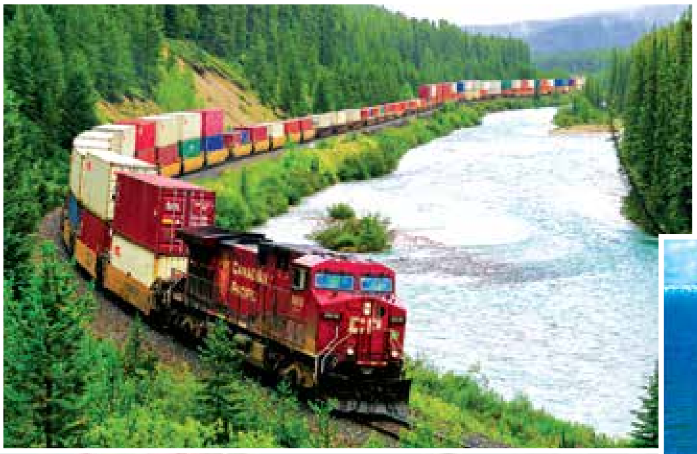

सुरक्षित माल-समय का ध्यान

एक मल्टीमोडल लॉजिस्टिक नवरत्न कंपनी के रूप में पूरे देश में 83 टर्मिनलों एवं 8 क्षेत्रीय कार्यालयों के व्यापक नेटवर्क के साथ सेवारत।

संपर्क : www.concorindia.com

कॉनकॉर
CONCOR

(रेल मंत्रालय का नवरत्न उपक्रम)
कंटेनर की बात, कॉनकॉर के साथ

पंजीकृत कार्यालय : भारतीय कंटेनर निगम लिमिटेड
कॉनकॉर भवन, सी–3, मथुरा रोड, जसोला अपोलो मैट्रो स्टेशन के पास, नई दिल्ली–76
फोन नं. : 011–41673093, 94, 95, 96 फैक्स : 011–41673112

Design & Printed at: **Viba Press Pvt. Ltd.,** 9810049515